कहूं या
ना कहूं
_by Shilpa
mehra

कवि परिचय

शिल्पा मेहरा उसका जन्म 2003 में बराड़ा नामक शहर में हुआ उनकी माता का नाम विना रानी और पिता का नाम रूप लाल है वह बिल्कुल साधारण जीवन जीना पसंद करती है उन्होने छोटी सी उम्र में दुनिया को समझना शुरू कर दिया था वह लोगो से ज्यादा बाते नही करती थी इसलिए उनको जो भी अपने जीवन में अनुभव होता है वह किसी के साथ साझा ना करके केवल किताबो में ही लिखना पसंद करती है वह इस दुनिया के लोगो को देखकर उनके रंग ढंग और उनका रहन सहन देखकर उनकी एक तस्वीर किताबो में ढालने की कोशिश करती है शिल्पा को स्कूल टाइम से ही किताबे लिखने में रूची थी 19 वर्ष की उम्र में जब उन्होंने बी.एड की पढाई शरू की तब उसे बहोत सी मुसीबतो का सामना करना पडा उन्हे लोगो का रहन सहन भेदभाव पसंद नही था उन्होंने देखा की आजकल बेटीओ पर बहुत अत्याचार हो रहे है एक औरत अपने ससुराल में दुखी है इत्यादी उसने छोटी सी उम्र में बहोत सी दुर्घटनाए देखी वह इस सब के खिलाफ आवाज उठाना चाहती थी लेकिन उन्हे कोई सुझाव नहीं आ रहा था इसलिए उन्होंने किताबो का रास्ता चुना और किताबे लिखनी शुरू कर दी जिसमे उसकी मदद करने वाले बहोत से लोग थे जैसे अमित शर्मा , विमला , प्राची ,मान कौर इत्यादि उनका कहना है की अगर आज वो इस काबिल बन पाई है तो अपने दादा दादी की वजह से यहां तक पहुंच पाई है उसके दादा ने उसकी पढ़ाई में उसकी सहायता की और उनके जाने के बाद उसकी दादी उसकी ढाल बनकर खड़ी हो गई वह अपने दादा दादी को ही अपनी सफ़लता का कारण मानती है

विषय सूचि

1. बेटी की पुकार – कविता
2 बेटी की कहानी – कहानी
3. एक बार – कविता
4. इस दुनिया को देखकर – कविता
5. मुझझे दुखी कोई नही – कविता
6. मेरा सपना – कहानी
7. जवानी याद आ गई – कहानी
8. प्यार की दास्तान – कविता
9. अंत आ गया मेरा – कविता
10. मुझे मौत नहीं आती – कहानी
11. प्यार की जीत – कहानी
12. मुसीबत का वक्त – कहानी
13. मत कर आत्महत्या – कविता
14. जा रही हूं तुझे छोड़कर – कविता
15. रोटी – कविता
16. बेटी – कविता
17. मेरे रिश्ते – कविता
18. एक से पांच तक – कहानी
19. वो अनमोल पल – कविता
20. पापा की परी – कविता
21. मैंने प्यार किया – कविता
22. दुनिया के रंग – कविता
23. मुझे पढ़ने दो – कविता
24. बेटी की पुकार – कविता

25. भाई - कविता - कविता
26. किंनर का दर्द – कविता
27. रब से प्यार - कविता
28. हमारा दुख - कविता
29. मेरा पंजाब - कविता
30. बुढ़ापा - कविता
31. बेटी की कहानी - कविता
32. गुरु का ज्ञान - कविता
33. ईश्वर का खेल कविता
34. जीवन का सच - कविता
35. वक्त - कविता
36. घर का बड़ा - कविता
37. जिदद - कविता

यह पुस्तक

यह पुस्तक उन लोगों के लिए है जो आज के जीवन में रहकर भी अपने कामकाज में इतने व्यस्त रहते हैं कि उनको खबर नहीं है कि आज के समाज में क्या हो रहा है और अगर खबर है तो उस बारे में सोच विचार नहीं करना चाहते इसलिए लेखिका का यह पुस्तक लिखने का एक छोटा सा प्रयास रहा है लेखिका लोगों तक वह बात पहुंचाना चाहती है जिससे लोग बेखबर हैं इस पुस्तक में लेखिका ने हर एक विषय पर चर्चा की है यह पुस्तक हर इंसान के लिए लाभदायक हैं इसमें कुछ कविताएं और कहानियां द्वारा लेखिका ने अपने भाव व्यक्त किए हैं इस पुस्तक में लेखिका ने एक बेटी के भाव व्यक्त किए हैं कि जब एक लड़की से उसकी मां को छीन लिया जाता है वह कैसे उसे बुलाती है बिन मां के एक बच्ची क्या हाल होता है बिन मां के उसकी जिंदगी कैसे बीतती है । यह पुस्तक उन लोगों के लिए भी है जब एक इंसान छोटी उम्र अपने सपने पूरे किये बिना इस दुनिया चला जाता है अपने मित्रों को कम उम्र में मरता देख दूसरा मित्र चिंता में पड़ जाता है और वह भगवान से अपने सपने पूरे करने की मांग करता है इस भाव को लेखिका ने एक कविता द्वारा व्यक्त

किया है इस पुस्तक को वह लोग भी पढ़ सकते है जो लोग दुनिया में बहुत दुखी है और उन्हें लगता है कि इस संसार में हमसें दुखी कोई नही। यह पुस्तक उन लोगों के लिए भी लाभकारी है जो लोग सारी उम्र अपने घरवालों के लिए काम करते है लेकिन बुढापे में उनके साथ क्या किया जाता है उसके बेटे उसकी किस प्रकार से सेवा करते है हमें अपने माता पिता के साथ कैसा रहना चाहिए, कैसा व्यवहार करना चाहिए । इसके बारे में लेखिका ने अपने मन के भाव एक कहानी द्वारा व्यक्त किए है। प्यार करना अच्छी बात है लेकिन वह कैसे किस ढंग से करना है जब हमें किसी ऐसे इंसान से प्यार हो जाए कि हमें अपने परिवार और प्यार में से किसी एक को चुनना हो उस वक्त एक लड़की की क्या हालत होती है वह अपनी सहेलियों से किस प्रकार सलाह लेती है और उसकी सहेलियां उसे क्या समझाती हैं इसके बारे में भी लेखिका ने कुछ पंक्तियां एक कविता के द्वारा लिखी है । जाना तो एक दिन सबको ही है लेकिन जब एक औरत का अपना घर छोड़कर इस संसार से जाने का समय आता है तो वह अपने भाव कैसे व्यक्त करती है अपने पति को क्या कहती है अपने अंत समय में अपने बेटे को क्या–क्या बातें समझाती है अपने अंत समय में वह अपने बेटे से किन–किन चीजों की मांग करती हैं ऐसे कुछ भाव भी लेखिका ने एक कविता के द्वारा प्रस्तुत किए हैं । इस पुस्तक में इस बारे में भी लिखने की कोशिश की गई कि कैसे एक अमीर घर की लड़की एक गरीब घर के लड़के से मोहब्बत करती है और उसके घर को किस प्रकार से संभालती है । एक इंसान दुनिया से इतना दुखी हो जाता है वह अपने कर्मों से दुखी हो जाता है और भगवान से अपनी मौत की मांग करता है लेकिन उसे मौत नहीं आती ऐसी भी कुछ बातें लेखिका ने एक कहानी के द्वारा पेश की है। इस पुस्तक में उन लोगों के बारे में बताया गया है जो इस दुनिया के लोगों से बहुत प्यार करते हैं लेकिन जब उन

पर मुसीबत आती है तो उस वक्त उनका कोई साथ नहीं देता वह अकेले रह जाते है और आत्महत्या करने की सोचते है आत्महत्या के बारे में भी इस पुस्तक में बहुत सी पक्तियां लिखी गई है । जब एक प्रेमी अपनी प्रेमिका से दुखी हो जाता है और उसे छोड़ देता है तो उसकी याद में एक कविता द्वारा अपने मन के भाव व्यक्त करती है । और भी बहुत सी कविताएं कहानियां इस पुस्तक में लिखी गई है इस पुस्तक को लिखकर लेखिका उन लोगों को समझाना चाहती है जो अपनी बेटी को नहीं पढ़ाते, अमीर गरीब में भेदभाव, स्कूल की यादें, अपने पापा की लाडली इत्यादि ।

एक बार

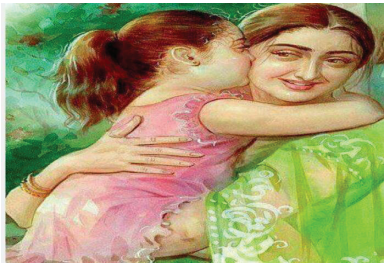

कहानी है ये एक ऐसी बेटी की //
जिसके सर पर ना मां का साया है ।
ना बाप का हाथ
कोई ना मिला जब मन हलका करने को

तो उठाया कलम और लिख दी मन की बात
वापस पाने को अपनी मां
भगवान तक से लड़ जाती है
और कहती है

दुनिया की इस भीड़ में मां का हाथ
छुट गया
तु भी ना बना मेरा
एक छोटी सी बच्ची से छीन लिया उसकी मां को तूने
क्या यही है इंसाफ है तेरा

निहारती है मा की तस्वीर और कहती है
जब मेरी सौतेली अपनी बेटी को गोद में सुलाती है

उस वक्त तेरी बहुत याद सताती है ।।
सोचती हूं काश तु मेरे भी पास होती
खाना खाती तेरे हाथ से तेरी गोद में सोती ।।

मारती है जब सौतेली मां तो पापा भी कुछ नहीं कहते
डरते हैं उनसे और बैठकर है देखते रहते ।।
अपनी बेटी को फूलों पर और मुझे कांटों पर चलाती है।
उस वक्त मॉ तेरी याद बहुत सताती है।

रो–रो कर पुकारू तुझे
एक बार तो आजा मां ।
मेरे दिल का हाल सुन जा और अपना सुना जा मां ।।
एक बार तो आ जा मां
एक बार तो आ जा मां ।।

यह एक ऐसी बेटी की कहानी है। जिसकी मां बचपन में ही उसका साथ छोड़कर भगवान के पास चली जाती है । जब वह बड़ी होती है तो बहुत सी जिम्मेवारियां उसकी सौतेली मां उस पर डाल देती है दुखों की मारी वह लड़की किसको अपना हाल सुनाएं जब कोई उसे अपना नहीं मिलता तो किताबों से प्यार करने लगती है और किताबों को अपना लेती है फिर वह हर बात एक कहानी और कविता के माध्यम से सब तक पहुंचाती है । वह भगवान को भी कहती है कि तूने एक तो मेरी मां को मुझसे छीन लिया और अब तू भी मेरा नहीं बन रहा यह कैसा इंसाफ है तेरा फिर वह अपनी मां की तस्वीर निहारती है और कहती है कि जब मेरी सौतेली मां

अपनी बेटी को प्यार करती है दुलार करती है अपनी गोद में सुलाती है और खाना खिलाती है उस वक्त मां मुझे तेरी बहुत याद आती है कि अगर तू मेरे पास होती तो मुझे भी मां का प्यार मिलता और जब मेरी सौतेली मां मेरे काम ना करने पर मुझे मारती है तो पापा उनके डर से कुछ नहीं कहते और बैठे देखते रहते हैं । कहती है अपनी बेटी को प्यार दुलार करती है फूलों पर रखती है और मुझे आग पर बिठाती है मारती है कहती है मां आजा तेरी बहुत याद आती है । कहते हैं मां को पूजने पर भगवान मिल जाता है लेकिन भगवान को पूजने पर मां नहीं मिलती मां का दर्जा दुनिया में सबसे पहला दर्जा होता है अगर मां नहीं होती तो कुछ नहीं मां के बिना कोई हाल नहीं पूछता कोई नहीं पूछता तूने रोटी खाई है या नहीं इसलिए अपनी मां की इज्जत करो वह लोग बहुत अच्छे कर्मों वाले होते हैं जिनके पास मां होती है।

इस दुनिया को देख कर

इस दुनिया को देखकर बहुत ख्याल मन में आते हैं ।
एक–एक दिन में कई लोग दुनिया से जाते हैं ।।

अपने हम उम्र को जब मरता देखती हूं ।
तो लगता है डर
बहुत से सपने बाकी है मेरे ।
कहीं छोटी सी उम्र में मैं ना जाऊं मर।।

जोड़ती हूं हाथ और भगवान से करती हूं दुआ ।
अगर तू बिना सपने पूरे हुए मुझे ले गया ।।
तो मेरा जन्म लेने का क्या फायदा हुआ।

अगर तू मुझे वक्त से पहले ले गया ।
तो तेरे साथ भी लड़ जाऊंगी । ।
अपने सपने पूरे करने के लिए।
एक बार फिर से धरती पर जरुर आऊंगी ।।

दिल की हर बात मैं किताब में लिखती हूं।
यह दुनिया इतनी मतलबी है ।
इस मतलबी दुनिया से हर रोज कुछ सिखती हूं। ।

इस मतलबी दुनिया की भीड़ में कही खो ना जाओ । ।
मुझे इतनी शक्ति देना मुझे कि अपना
हर सपना पूरा कर पाऊं ।।

किताबों से प्यार है मुझे ।
पर एक और इस बात से डरती हूं ।।
कहीं किताबें लिखते लिखते इतनी भी ना उलझ जाऊं ।
कि दो घड़ी तुझे याद भी ना कर पाऊं । ।

तू इतनी कृपा करना ।
कि मैं अपना हर फर्ज निभा पाऊं
यहां के सारे फर्ज निभा कर ।
फिर खुशी–खुशी तेरे पास आऊं ।।

यह कहानी उन लोगों की है जो सपने तो देखते हैं लेकिन पूरे होने से पहले ही उनकी मृत्यु हो जाती है ऐसे लोगों को देखकर मेरे मन में भी यह ख्याल आता है कि कहीं मैं सपने पूरे किए बिना इस दुनिया से ना चली जाऊं आजकल छोटी छोटी उम्र में ही लोग दुनिया छोड़कर जा रहे हैं इसी हालातों को देखकर लेखिका ने यह कहानी लिखी है जिसमें वह भगवान से कहती है कि हे प्रभु इस दुनिया को देखकर मेरे मन में बहुत

से ख्याल आते हैं मैं देखती हूं कि हर एक दिन इस दुनिया में एक बच्चा जन्म लेता है तो दूसरी ओर एक मनुष्य इस दुनिया से चला जाता है उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो बिना सपने पूरे किए यहां से चले जाते हैं कहती है जब मैं देखती हूं कि मेरी उम्र के लोग इस दुनिया से जा रहे हैं तो डरती हूं कहीं बिना सपना पूरे किए मैं ना चली जाऊं वह भगवान के आगे हाथ जोड़कर प्रार्थना करती है कि अगर तु मुझे यहां से बिना सपने पूरे किए ले गया तो मेरा इस संसार में आने का क्या फायदा होगा कहती है कि अगर तु मुझे मेरे सपने पूरे होने से पहले ले गया तो मैं तेरे साथ भी लड़ जाऊंगी लेकिन अपने सपने पूरे किए करने के लिए एक बार फिर दुनिया में मैं जरूर आऊंगी । वह कहती है कि अपने दिल की हर बात में किताब में लिखती हूं और कहती है कि यह दुनिया इतनी मतलबी है कि जब भी इस मतलबी दुनिया को देखती हूं तो रोज कुछ नया सीखने को मिलता है कहती है कि इस मतलबी दुनिया में कहीं खो ना जाऊं मुझे इतनी शक्ति देना कि मैं अपना हर सपना पूरा कर पाऊं कहती है कि मैं किताबों से प्यार तो करती हूं पर एक और बात से डरती हूं कि किताबें लिखती लिखती मैं इतना ना उलझ जाऊं कि दो घड़ी बैठकर तेरा ध्यान ना कर पाऊं । फिर कहती है कि हे प्रभु मेरे ऊपर इतनी कृपा करना कि मैं इस दुनिया का हर फर्ज निभाओ अपने सारे फर्ज निभाकर फिर मैं खुशी–खुशी तेरे पास आ जाऊं । हर इंसान बचपन में ही अपनी छोटी–छोटी आंखों से बहुत सपने देखने शुरू कर देता है और बचपन से ही उसकी तैयारी में लग जाता है और अगर उसका किसी कारण सपना पूरा ना हो पाए तो वह सारी जिंदगी पछताता है और बहुत दुखी होता है सपना दुनिया में हर इंसान देखता है फिर वह अमीर घर से हो या गरीब घर से हो सिख धर्म से हो या मुस्लिम यह बात अलग है कि उसके सपने

अलग–अलग हो सकते हैं हर इंसान का दुनिया में रहने का कोई ना कोई मकसद जरूर है फिर चाहे वह बेटी है भाई है या पत्नी है ।

मुझसे दुखी कोई नहीं

मुझसे दुखी कोई नहीं ।
किसी में नहीं मेरे जितना दर्द
माना सब दुखी हैं इस संसार में ।
फिर वह औरत हो या मर्द ।।

लड़ता हूं भगवान से ।
क्यों मुझे इतना दर्द दिया । ।
क्या बिगाड़ा था मैंने किसी का ।
क्या गलत कर्म किया । ।

बैठा अकेला घर में सोचता हूं ।
दुख सिर्फ मेरा ही हिस्से में क्यों आया । ।
सब खुश हैं दुनिया में ।
फिर मुझे ही क्यों गमों ने खाया । ।

लड़ता हूं भगवान से ।
तो कभी करूं अरदास । ।
दुख ही दुख है जिंदगी में ।
खुशी फटकती नहीं कहीं आस–पास ।।

निकला मैं घर के बाहर ।
देखी दुखी दुनिया तो निकल गया सारा भ्रम । ।
मुझे दुखी करने वाला भगवान नहीं ।
यह तो है मेरे अपने ही कर्म ।

दुखी हूं मैं दुखी है मेरा परिवार
नहीं समझ आ रहा क्या है मेरे जीने का आधार

दुखी है सारी दुनिया ।
अकेला मैं ही नहीं दुखों का सताया । ।
कोई पिछले कर्मों को लेकर बैठा है ।
तो किसी ने इस जन्म में पाप कमाया ।।

सारी जिंदगी बीत गई मेरी ।
दुखों की चिंता में ।।
और फिर एक दिन मेरा अंत आया ।
मेरे प्रभु आये मेरे पास और लगे पूछने
बता बंदे तूने क्या है कर्म कमाया ।।

उस वक्त मेरा सर शर्म से झुक गया ।
मैं बहुत ही पछताया ।।

शर्म की बात थी मेरे लिए।
दुखों की चिंता में व्यर्थ ही सारा जीवन गवाया ।।
पर दो घड़ी भगवान का नाम भी ना ले पाया ।
प्रभु बोले भेजा था तुझे दुनिया में कर्म कमाने के लिए ।
और तु दुखों का भंडार उठा लाया

देख तेरा परिवार ।
आज तेरे बिना भी सब सही चल रहा है । ।
वो सब बैठे है सुखी ।
और उनकी चिंता में तु आज आग में जल रहा है। ।

ए बंदे तेरी यही है कहानी ।
तूने दुख में व्यर्थ जन्म गवाया ।।
दुनिया की चिंता खा गई तुझे ।
और खा गई मोह माया।।

तेरा जीवन अनमोल है ।
इसे व्यर्थ की चिंता में ना गॅवा ।।
छोड़ के दुनिया की चिंता ।
कर ले भगवान को याद ।।
त्याग दे ओ मोह माया ।

बेटी बेटा भाई बहन किसी ने साथ नहीं जाना ।
अंत में आएगा भगवान ।।
धरी रह जानी है मोह माया ।

दुनिया की चिंता छोड़ दे ।

मत कर मेरी मेरी ।।
एक दिन आएगा ।
तु मिट्टी में मिल जाएगा ।।
घड़े में होंगी हड्डियां ।
ये औकात है तेरी ।।

इस दुनिया में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो दुखी ना हो हर घर में कोई ना कोई दुख जरूर है । इस दुख को देखकर एक कविता लिखी गई है और वह कहता है कि मुझसे दुखी इंसान इस दुनिया में कोई नहीं है कहता है इस संसार में सब दुखी हैं फिर चाहे वह आदमी हो या औरत हो पर सबसे ज्यादा दुख भगवान ने मुझे दिया है वह भगवान से लड़ता है और कहता है मुझे इतना दर्द क्यों दिया मैंने किसी का क्या बिगाड़ा था मैंने क्या गलत कर्म किया था मैंने ऐसा कौन सा पाप किया था कि मुझे इतनी बड़ी सजा दी एक दिन घर में अकेला बैठा है और सोचता है कि आखिर भगवान ने मेरे हिस्से में इतना दुख क्यों लिखा है मैं दुनिया को देखता हूं सब खुश हैं सुखी हैं फिर मुझे गम क्यों खा रहे है कहता है मैं कभी भगवान से लड़ता हूं तो कभी अरदास करता हूं कि मेरी जिंदगी में दुख ही दुख है खुशी कहीं भी आसपास नहीं है कहता है जब मैंने दुनिया के बाहर निकल कर देखा तो मेरा सारा भ्रम निकल गया कि मुझे दुखी भगवान ने नहीं किया बल्कि मेरे बुरे कर्मों ने किया है जो मैंने कर्म किए उनका ही फल मुझे मिला है जो मैं भुगत रहा हूं पूरी दुनिया दुखी है सिर्फ मैं दुख का मारा नहीं हूं कोई पिछले पापों की सजा भुगत रहा हूं तो किसी ने इस जन्म में पाप कमाया है जो लोग भुगत रहे हैं कहते हैं मेरी सारी जिंदगी लोगों की चिंता में बीत गई कभी बेटी की चिंता में कभी बेटे की कहीं काम काज की मैंने अपना सारा जीवन चिंता में व्यर्थ गवा दिया

फिर जब मेरा दुनिया छोड़ने का समय आया तो मेरे भगवान मेरे पास आते हैं और मुझे पूछने लगे की बता तूने क्या कर्म कमाया इस जीवन में मेरा सिर शर्म से झुक गया और मुझे बहुत पछतावा हुआ कहता है मेरे लिए शर्म की बात है कि मैंने सारा जीवन व्यर्थ चिंताओं में गवा दिया मैंने दो घड़ी अपने प्रभु की याद नहीं किया फिर भगवान मुझे कहते हैं कि मैंने तुझे चिंता करने के लिए नहीं कर्म करने के लिए भेजा था और तू दुखों का भंडार उठा लाया फिर मेरे परिवार की और इशारा करता है और कहता है देख तेरे परिवार को बिना कि तेरे बिना भी वह जी रहे हैं सब कुछ सही चल रहा है क्यों व्यर्थ ही उनकी चिंता करता था कहता था देख आज वह सुखी हैं और तू जीवन में चिंता में चलता रहता है तूने खुशी ना पाई और आज भी तू उनकी वजह से आग में जल रहा है इंसान तेरी बस यही कहानी है तूने चिंताओं में व्यर्थ समय गवाया है हम चिंता में पड़ जाते हैं पर यह नहीं सोचते कि हमारा जीवन पहले से तय है जो उसने लिख दिया होना तो वही है ऐ बन्दे तुझे दुनिया की चिंता खा गई और इसके अलावा तुझे मोह माया ने खा लिया भगवान ने जीवन हमें दिया है वह अनमोल है हमें इसी चिंता में नहीं गवांना चाहिए हमें इस दुनिया की चिंता को छोड़कर भगवान का घड़ी दो घड़ी नाम लेना चाहिए और मोह माया को त्याग देना चाहिए । तेरा बेटा बेटी भाई बहन किसी ने तेरे साथ नहीं जाना अंत में तुझे सिर्फ भगवान लेने आएंगे तेरी मोह माया यही रह जाएगी इस दुनिया की चिंता करनी छोड़ दे मेरी मेरी मत कर और तू किस बात का घमंड करता है एक दिन आएगा तू मिट्टी में मिट्टी में होगा और एक घड़े में तेरी हड्डियां होगी सिर्फ इतनी सी औकात है तेरी ।

मेरा सपना

हमारे देश में हजारों लोग सपने देखते हैं किसी का एक भी सपना टूट जाए तो दिल टूट जाता है बहुत लोग होते हैं जो बचपन से सपने देखते हैं और उनको पूरा करने में जुट जाते हैं और उनके सपने पूरे हो जाते हैं लेकिन बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो अपने सपने पूरे तो करना चाहते हैं लेकिन कर नहीं पाते ऐसे लोगों में से एक लड़की नागपुर गांव की थी नाम था उसका राधा वह एक गरीब घर से थी लेकिन छोटी सी उम्र में उसने सपने देखना शुरू कर दिया था उसका सपना था कि वह पढ़ लिखकर ऐसी इंसान बनेगी कि उसके दुनिया में से चले जाने के बाद भी उसका नाम होगा दसवीं की पढ़ाई के बाद उसने जब घरवालों से आगे दाखिले की मांग की तो उसके घर वालों ने उसे यह कहकर मना कर दिया कि हमें कौन सा तुझसे नौकरी करवानी है जितना मर्जी पढ़ ले बनानी तो रोटी ही है राधा को यह बात बुरी लगी लेकिन उसके बस में उस वक्त कुछ नहीं था कुछ दिन बाद वह सिलाई सीखने लगी सिलाई सीखने के बाद उसने पार्लर कोर्स किया वह घर का काम भी अच्छे से करती थी सारा दिन वह इन सब कामों में व्यस्त रहती लेकिन रात को ना

सोती बहुत बहुत देर तक रोती रहती अपने सपनों के बारे में सोच कर कहां वह चाहती थी कि पूरे देश में उसका नाम हो और कहा वह एक मामूली सी लड़की बनकर रह गई । कुछ समय बीता और अब राधा अपने सपने मन में ही दबाकर घर के कामकाज में व्यस्त रहती उसके घर वाले उसे अकेला बाहर नहीं जाने देते थे फिर भी वह खुशी खुशी अपनी जिम्मेदारियां निभाती थी राधा का भगवान में भी विश्वास था कुछ समय बाद राधा के पापा के दोस्त उनके घर आते हैं वह डॉक्टर होते हैं वह राधा से उसका नाम पूछते हैं राधा अपना नाम बताती है वह उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हैं और कहते हैं कि मेरे पास भी एक बेटी है वह वकील है फिर वह अपने बारे में बताते हैं कि मैं डॉक्टर हूं इसके साथ मुझे कॉलेज टाइम से भी लिखने का शौक है मैं कविताएं और कहानियां लिखता हूं कुछ देर की बातचीत के बाद वह वहां से चले जाते हैं और राधा अपने काम में लग जाती है कुछ दिन बाद जब राधा अपने घर के आंगन में बैठी कुछ सोच रही होती है कि तभी उसकी सहेली उसके पास आती हैं वह उसे बताती है कि वह 12वीं कक्षा में पहले नंबर पर आई है राधा उसको बधाई देती है और उदास हो जाती है जब उसकी सहेली उससे उसकी उदासी का कारण पूछती है तो वह बताती है कि मेरे भी बहुत से सपने थे काश वह पूरे हो पाते, तभी उसकी सहेली उसे किताबें लिखने का सुझाव देती है। यह सुनते ही वह उसे बताती है कि कुछ दिन पहले मेरे पापा के दोस्त भी आए थे उन्होंने भी मुझे बताया था कि उनको लिखने का शौक है और मैंने यह सोच कर इसे अनसुना कर कि वह विद्ववान है मैंने तो इतनी पढ़ाई नहीं की और मुझे इसके बारे में ज्यादा जानकारी भी नहीं है और मैं इसमें क्या लिखू मुझे इसके बारे में भी कुछ नहीं पता तभी उसकी सहेली उसे बताती हैं कि तू सिर्फ अपने मन की बात उस किताब में लिख दे जो भी तु दुनिया में देख रही हैं और

राधा की सहेली राधा को इसके बारे में बताती ही है कि वहां राधा के पापा आ जाते हैं और बोलते हैं कि तू पढ़ रही है तो अच्छी बात है हमारी बेटी कोई यह उल्टी सिख मत दे, बेटियां सिर्फ घर का काम करते अच्छी लगती हैं पढ़ाई करते तो बेटे अच्छे लगते हैं राधा की सहेली यह सुनकर निराश हो जाती है और वहां से चली जाती है। लेकिन राधा इस बारे में सोचती है और वह घर वालों को बिना बताए लिखना शुरु कर देती है । जब उसकी एक किताब तैयार हो जाती है तो वह अपनी अध्यापिका की सहायता से उसे छपवाती है और जब उसकी किताब छप जाती है तो लोग उसकी किताब में लिखी गई बातें बहुत पसंद करते हैं जब उसके घर वालों को यह बात पता लगती है तो उन सब का सिर शर्म से झुक जाता है उनको सब याद आ जाता है कि हमने कैसे इसकी पढ़ाई छुड़वाई थी वह पछताते हैं आज राधा का नाम पूरी दुनिया में एक पुस्तक के रूप में है भले ही उसने इतनी पढ़ाई नहीं की लेकिन उसने जो सपना देखा था वह पूरा हो गया राधा किताबें लिखने के साथ–साथ घर की जिम्मेवारियों को भी बखूबी निभाती है।

जवानी याद आ गई

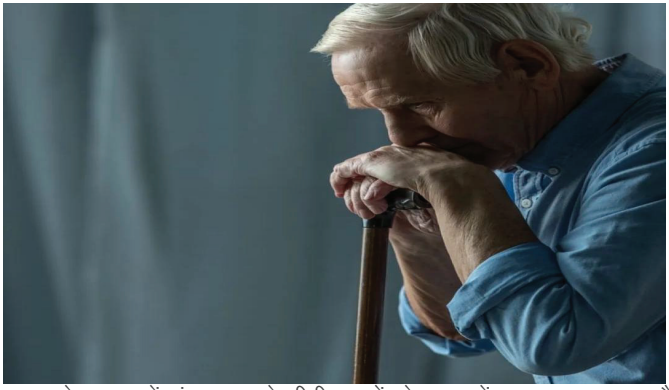

आज के टाइम में इंसान अपने बीवी बच्चों के प्यार में इतना डूब जाता है कि वह आने वाला कल भूल जाता है वह नहीं जानता कि कल मेरी जिंदगी क्या मोड़ लेगी। बस अपने बच्चों की सेवा में लगा रहता है और अपना सारा जीवन उनमें व्यर्थ कर देता है वह सारी जिंदगी यह सोचने में निकाल देता है की बेटी की शादी कैसे होगी । बेटे के लिए धन दौलत कैसे ईक्कठी करूं इत्यादि । ऐसी ही कहानी है एक राजेश नाम के लड़के की राजेश के परिवार में उसकी पत्नी दो बेटे और एक बेटी थी राजेश हर वक्त चिंता में रहता क्योंकि उसकी बेटी अब शादी के लायक हो गई थी और बेटे भी अच्छी नौकरी करते थे राजेश को हर वक्त अपनी बेटी की चिंता सताती रहती थी राजेश का बड़ा बेटा रवि जिसकी तबीयत अक्सर खराब रहती थी राजेश को उसकी भी अक्सर चिंता रहती थी वह कहीं भी जाता किसी भी दोस्त से मिलता तो अपने बच्चों की चिंताएं बताता फिर एक दिन आया उसका बड़ा बेटा रवि अपने ऑफिस में काम कर रहा था कि उसकी तबीयत अचानक से खराब हो गई और उसे ऑफिस से छुट्टी लेकर घर जाना पड़ा वह घर गया तो उसकी हालत ज्यादा खराब हो गई दिन बीतते जा रहे थे पर उसकी हालत में कोई सुधार नहीं था बल्कि दिन पे दिन और भी खराब होती जा रही थी अब उसके पिता राजेश

कुमार और भी चिंतित होने लगे रवि की हालत इतनी बिगड़ गई थी कि वह बिस्तर से भी नहीं उठ पा रहा था अब रवि का भाई अकेला काम करता लेकिन उसके काम से पूरे घर का खर्च करना राजेश के लिए मुश्किल हो गया था फिर राजेश ने खुद काम करने की सोची राजेश अगले ही दिन काम पर जाने लगा वह सारा सारा दिन काम में व्यस्त रहता एक तरफ काम करता दूसरी और उसे अपने बेटे की चिंता सताती शाम को थक हार कर काम से आता तो अपने बेटे की सेवा में लग जाता राजेश की पत्नी एक दिन बाजार से सामान लेने के लिए जा रही थी कि उसकी एक रोड एक्सीडेंट में मौत हो गई अब राजेश बहुत ज्यादा चिंता में पड़ गया क्योंकि वह अकेला पड़ गया था पत्नी भी साथ छोड़ गई राजेश ने अपने बेटे रवि को अच्छे अस्पताल में इलाज करवाया धीरे धीरे उसकी हालत ठीक हो रही थी कुछ दिन बाद जब वह बिल्कुल ठीक हो गया तो उसने फिर से नौकरी करनी शुरू कर दी अब राजेश ने बेटी की शादी करने की सोची कुछ वक्त बाद वह अपनी बेटी की शादी कर देता है अब घर में रोटी की दिक्कत आ गई थी तो राजेश ने अपने बड़े बेटे की शादी कर दी अब राजेश का छोटा बेटा सुनील विदेश चला जाता है और राजेश पर भी बुढापा आ जाता है लेकिन अब किसी चीज की चिंता नहीं थी चिंता थी तो अपनी पत्नी की वो उसे अकेले छोड़कर चली गई थी अब राजेश अक्सर बीमार रहने लगता है वह हर वक्त बिस्तर पर बैठा खांसता रहता उसकी बहु को उसका यह व्यवहार अच्छा ना लगता जब उसकी बीमारी ज्यादा बढ़ गई तो उसकी बहु भी परेशान आ गई थी क्योंकि अब वह चलने के काबिल ना था एक दिन उसकी बहू उसके बेटे से बोलती है मुझसे तुम्हारे बाप के नखरे नहीं उठायें जाते मैं सारा दिन काम करती करती थक जाती हूं तुम कल ही इसे कहीं दूर छोड़ आओ जहां से यह कभी वापस ना आ सके बेटा अपनी पत्नी की बात मान लेता

और ठीक वैसा करने की सोचता है सुबह होती और वह अपने पिता को कहता है आओ पापा मैं आपको घुमा कर लाता हूं वह चलने के लायक नहीं था इसलिए वह अपने पिता को अपने कंधे पर बिठाता है और चल पड़ता है जब वह रास्ते में जाते हैं वहॉ लोग पिता को बेटे की कंधों पर बैठा देख बहुत खुश होते हैं कि कितना अच्छा बेटा है अपने पिता को कंधे पर बैठाकर तीर्थ यात्रा करवा रहा है भगवान ऐसा बेटा सबको दे लड़का उन सब की बातों को अनसुना करके आगे बढ़ जाता है बहुत दूर जाने पर एक खाई आती है पिता पहले ही समझ जाता है कि मेरे साथ क्या होने वाला है जब बेटा पिता को खाई में गिराने ही वाला होता है तो पिता उसे रोकता है और बोलता है रुक बेटा मुझे यहां मत गिरा यहां तो मैंने अपने पिता को गिराया था तू मुझे दूसरी खाई में गिरा दे तो उसका बेटा उसे कंधे से उतारता है और रोने लगता है और कहता है पापा मैं आपको नहीं गिराऊंगा कल आपने अपने पिता को गिराया था आज मैं आपको गिरा दूंगा तो कल मेरा बेटा भी मुझे यही गिराने आएगा वह उसे वैसे ही उठाकर घर ले जाता है फिर उसका पिता सोचता है मैंने अपनी सारी उम्र अपने बच्चों की चिंता में निकाल दी जब मेरा बेटा बीमार था तब मैंने इसकी सेवा की और अब जब मेरी सेवा करवाने की बारी आई तो मुझे खाई में फेंका जा रहा था । यह सब अपने अपने कर्म है आज जो हम अपने माता–पिता के साथ करते हैं कल को हमारे बच्चे हमारे साथ यही करेंगे।

प्यार की दास्तान

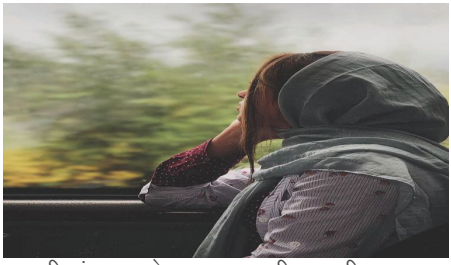

सुनाती हूं सुन लो एक प्यार की कहानी ।
प्यार करने की उम्र ना थी मेरी ।।
पर खुद पर काबू ना कर सकी जब आई मुझ पर जवानी ।
एक और सच्चा प्यार और दूसरी और परिवार
इन दोनों में में जूझने लगी
पहले जैसी ना रही तेरी हंसी
बदल तू क्यों गई मेरी सखी मुझसे पूछने लगी
बैठ सखी तुझे बात बताऊं
दिल का हाल तुझे सुनाऊं
सुन ले मेरी बात और निकाल इसका हल
बड़ी उलझी जिंदगी हो गई है मेरी
बड़ी मुश्किलों से कटते हैं मेरे पल
प्यार की तरफ जाऊं तो डरती हुँ
परिवार ना कुछ कर जाए
पकडू अगर प्यार का दामन तो घबराता है दिल
मेरे बिन मेरा प्यार ना मर जाए
फिर मेरी सहेली ने मुझे बताया
तू याद कर तेरे माता–पिता ने तुझे क्या था सिखाया

दिल पर हाथ रख और सोच क्या तु उसके साथ भाग जाएगी
ना प्यार की रहेगी ना परिवार की जिंदगी होगी खराब तेरी
और तू घुट घुट कर मर जाएगी

परिवार मिलेगा एक बार पर
प्यार मिल जाएगा दोबारा
शादी तेरी भी हो जाएगी
और वो भी तेरे बिन नहीं रहेगा कुंवारा

उसके वादे झूठे हो सकते हैं
पर परिवार के वादे सच्चे हैं
हमें दुनिया की क्या खबर
हम तो अभी बच्चे हैं

तेरे माता–पिता ने जब जन्म दिया तुझे
तो किया था एक वादा
लाएंगे तेरे लिए सुंदर वर
जोड़ी तेरी लगेगी जैसे कृष्ण और राधा

मान मेरी बात और अपना ले अपना परिवार
प्यार प्यार कुछ नहीं यह तो है एक व्यापार

जो लड़का तुझसे प्यार करेगा
उसका कोई मतलब जरूर होगा
जब होगा उसका मतलब पूरा

तो दे जाएगा तुझे धोखा

तुझे परिवार से ना मिलेगा धोखा
और ना है उनकी कोई मांग
परिवार की कीमत जान ले
प्यार के पीछे मत भाग ।

प्यार एक ऐसी चीज है कि बड़े से बड़े चट्टान हिला सकती है कितने भी भयानक गुस्से को हम प्यार की सहायता से शांत कर सकते हैं लेकिन अगर प्यार गलत इंसान के साथ हो जाए तो हमारी जिंदगी बर्बाद कर सकता है आज के बच्चों ने प्यार को मजाक बना दिया है कहते हैं जो एक का ना हो सका वह दर–दर भटकता है इससे भाव है कि किसी ने आपके साथ प्यार किया अगर वह आपका ना हुआ और आपको धोखा दे जाता है तो वह किसी का नहीं हो सकता वो कल किसी और का था आज आपका है तो कल किसी और का होगा लेकिन वह एक का बनकर नहीं रह सकता सच्चा प्यार तो परिवार का होता है जो हमें चाह कर भी धोखा नहीं दे सकता इसी प्यार को देखकर एक कविता में प्रेमिका कहती है कि मेरे प्यार की कहानी सुनो वह बताती है मेरे प्यार करने की उम्र नहीं थी पर जब मुझ पर जवानी तो उसने मुझे अंधा कर दिया और मैं प्यार कर बैठी बताती है कि दो रास्ते थे और उन दो रास्तों के बीच में खडी थी एक और मेरा प्यार था और दूसरी और मेरा परिवार था इन दोनों के बीच में फंसी हुई थी फिर मेरी सहेली मेरे पास आती है और कहती है कि क्या हाल हो गया है तेरा ना तो पहले जैसे बोलती है ना हंसती है वह मुझे मेरी उदासी का कारण पूछने लगी हम अक्सर अपने मन की हर बात को अपने मित्रों को जरूर बताते हैं सखी के पूछने पर

मैंने उसे कहा बैठ तुझे मैं अपने दिल का हाल सुनाऊ मेरी बात सुन और मुझे इसका हल बता मेरी जिंदगी बहुत उलझ गई है और मेरे पल भी बहुत मुश्किल से निकलते हैं वह बताती है मुझे समझ में नहीं आ रहा कि मैं कहां जाऊं एक तरफ मेरा प्यार है और दूसरी तरफ मेरा परिवार वह कहती है मुझे डर लगता है कि अगर मैं प्यार की तरफ जाती हूं तो कहीं मेरे पापा कुछ कर ना ले वह मुझसे प्यार करते हैं मेरे बिन मर जाएंगे और अगर मैं अपने परिवार की तरफ जाती हूं तो इस बात से घबराती हूं कि मेरा प्यार मेरे बिन कुछ कर ना ले मैं इन उलझनों में पड़ी हूं ऐ सहेली मुझे इस समस्या से मुक्त कर फिर उसकी सहेली उसे बताती है कि तू याद कर तेरे माता–पिता ने तुझे क्या संस्कार दिए हैं कहती है कि अपने दिल पर हाथ रख और सोच की क्या तु अपने प्यार के साथ भाग कर शादी कर सकती है वह कहती है कि भागकर तो खुश नहीं रहेगी 3–3 जिंदगियां खराब हो जाएंगी और तु ऐसे ही घुट घुट कर मर जाएगी वह उसे बताते है कि परिवार एक बार मिलता है लेकिन प्यार तो दोबारा भी मिल जाता है । और इसके साथ बताती है कि तेरे घर वालों ने अगर तेरी शादी कर दी तो भी गंवारा नहीं मरेगा तेरा प्यार जितने मर्जी वादे कर ले कि वह तेरे बिन नहीं रहेगा लेकिन अगर एक बार तेरी शादी हो गई तो वह भी शादी जरूर कर लेगा उसके वादे झूठे हो सकते हैं पर तेरे परिवार ने जो तेरे साथ वादे किए हैं वह सच्चे वादे किए हैं और वह निभाएंगे हमें दुनिया की कोई खबर नहीं है हम अभी बच्चे हैं चालाकियां हम नहीं जानते बताती है तेरे माता–पिता ने जब मुझे जन्म दिया था तब उन दोंनो ने तेरे साथ एक वादा किया था जब मां के गर्भ से एक बच्चा जन्म लेता है तो उसके माता–पिता बहुत से सपने देखते हैं कि हम अपने बच्चे के लिए बहुत कुछ करेंगे और अगर वह एक बेटी हो तो उनका सपना होता है कि उनकी बेटी खुशी–खुशी अपने ससुराल में चली जाए और उनकी

बेटी का वर बहुत सुंदर हो और उनकी जोड़ी राधा और कृष्ण जैसी लगे । कहती है मेरी बात मान ले और अपने परिवार को अपना ले प्यार प्यार कुछ नहीं है यह तो एक व्यापार है इस दुनिया में सच्चे रिश्ते अपने परिवार के साथ होते हैं दुनिया मतलबी है बिना मतलब के किसी को नहीं अपनाती वह बताती है जो भी लड़का तुझसे प्यार करेगा उसका कोई ना कोई मतलब जरूर होगा जब उसका मतलब पूरा हो जाएगा तब वह तुझे छोड़ जाएगा उस घड़ी में तेरा परिवार ही तेरा साथ देगा तेरे परिवार को तेरे साथ कोई मतलब नहीं है उनकी तो दौलत तू ही है उनकी कोई मांग नहीं है परिवार एक अनमोल दौलत हैं उनकी कीमत जान ले अपने प्यार के पीछे मत भाग ।

अंत आ गया मेरा

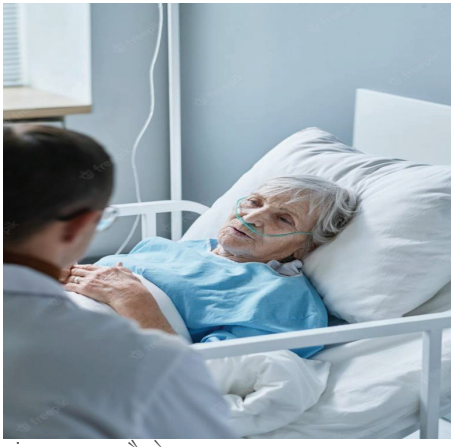

अंत आ गया है मेरा
देख लो मुझे भी जी भर कर आज
जल जाएगा शरीर आत्मा चली जाएगी ऊपर
मरने के बाद

बुला दो मेरे पति को उसके अंतिम दर्शन कर लूं
पकड़ू उसका हाथ एक ठंडी आह भर लूं

सारी जिंदगी बिताई जिसके साथ
आज उसे छोड़कर जाना पड़ रहा है
जितनी लिखी थी इसके साथ तेरी निभा ली तूने
मेरे प्रभु ने खुद आकर मुझे कहा है

एक बार तूने मांग भरी थी मेरी
अब मेरा प्रभु आकर भरेगा

उंगली पकड़ कर ले जाएगा मुझे
भवसागर से पार भी वही करेगा

एक बार चूड़ियां चढ़ी थी तेरे नाम कि
अब वो बंजारा आ रहा है
कर लेगा प्रभु को याद दो दिन की जिंदगी है तेरी
बार–बार यही गीत गा रहा है

कल मेहंदी रची थी तेरे नाम की
अब उसके नाम की रचाऊंगी
तुझे छोड़ पकड़ रही हूं उसका हाथ
और उसके संग ही चली जाऊंगी ।

शादी में तु मुझे घर से लेने आया था और
वो भी घर से लेने आएगा
तेरी भी कार फूलों की सजी थी
वो भी ऐसी ही गाड़ी लाएगा

अब बुलाओ मेरे बेटे को उसे मैं समझाऊं
कैसे पाला है उसे हमने
उसको यह बताऊ
कैसे आपने अपनी भूख मारकर उसका पेट भरा
उसको भी यह सिखाऊं ।

आता है पास बेटा
तो उसे पिता की कुर्बानी बताती है

धन दौलत जेवर सब बनाया है तेरे लिए
घर की ओर इशारा करके दिखाती है

मेरे जाने के बाद अपने पिता की उम्मीदों को मत तोड़ना
जैसे तेरे पिता ने तेरे लिए जोड़ा है
तू भी अपने बेटे के लिए जोड़ना

धक्के मार कर उन्हें घर से मत निकाल देना
मन से सेवा करना उनकी
और भरपूर आशीर्वाद लेना

जाने का समय आ गया मेरा
यही कहती सबके आगे हाथ जोड़ देती है
प्रभु नजदीक आ गए मेरे यही कहती अपने सास छोड़ देती है

पति पत्नी का रिश्ता दुनिया का सबसे खूबसूरत रिश्ता होता है दोनों में से एक का साथ छुट जाए तो जिंदगी जीनी मुश्किल हो जाती है ऐसी ही एक कहानी कविता के माध्यम में लिखी गई है इंसान को जब दुनिया छोड़कर जाना होता है तो उसे कुछ दिन पहले ही आभास हो जाता है कि मैं दुनिया से जाने वाला हूं और जब एक पत्नी दुनिया से जाती है तो वह अपने परिवार से कहती है कि मेरा अंत समय आ गया है मुझे जी भर कर देख लो मरने के बाद मेरा शरीर जल जाएगा और मेरी आत्मा परमात्मा के पास चली जाएगी फिर वह कहती है कि मेरे पति को बुला दो मुझे उनके एक बार दर्शन करने हैं उसका हाथ पकड़कर एक ठंडी आहट भरती है । फिर वह कहती है कि मैंने जिसके साथ सारी उम्र बिताई है आज मुझे उसको छोड़ कर जाना पड़ रहा है फिर कहती है कि

मुझे भगवान ने खुद आकर कहा है कि जितनी तेरी इसके साथ लिखी थी तूने निभा ली अब मैं तुझे लेने आया हूं तेरा समय पूरा हो गया है फिर वह अपने पति से कहती है कि एक बार तूने मेरी मांग भरी थी अब मेरे प्रभु आकर भरेंगे उंगली पकड़कर मुझे इस संसार से ले जाएंगे और भवसागर से पार करेंगे एक बार तेरे नाम की चूड़ियां मुझे चढ़ी थी और अब वो बंजारे के रूप में आया है और बार–बार यही कहता है कि तेरी 2 दिन की जिंदगी है थोड़ा टाइम निकाल कर उस परमात्मा को याद कर ले यही तेरे साथ जाएगा और सब कुछ यहीं रह जाएगा एक बार मैंने तेरे नाम की मेहंदी रचाई थी अब मैं उसके नाम की रचाऊंगी तेरा हाथ छोड़ कर उसका हाथ पकड़ रही हूं और उसके साथ ही चली जाऊंगी कहती है शादी वाले दिन तू मुझे एक फूलों से सजी कार में लेने आया था और मेरे ही घर से लेकर गया था वह भी घर से ही लेने आएगा और वैसे ही कार लेकर मुझे उसमें बिठा कर ले जाएगा अब कहती है मेरे बेटे को बुलाओ मुझे उसे समझाना है कि उसके पिता ने उसे कैसे अपना खून पसीना एक करके पाला है कैसे उसके पिता ने अपनी भूख मारकर उसका पेट भरा था जब उसके पास बेटा आता है तो कहती है कि सुन बेटा तेरे पिता ने तेरे लिए बहुत सी कुर्बानियां दी हैं तेरे पिता ने अपना खून पसीना एक करके तेरे लिए सब कुछ बनाया है धन दौलत जेवर फिर वह घर की ओर इशारा करती है और कहती है देख इन सब के साथ–साथ उन्होंने तेरे लिए घर भी बनाया है उसको समझाती है कि मेरे जाने के बाद तू अपने पिता की उम्मीदें मत तोड़ना उन्होंने तेरे साथ बहुत सी उम्मीदें रखी है जैसे तेरे पिता ने तेरे लिए यह सब कुछ जोड़ा है तू भी खूब मेहनत करना और अपने बेटे के लिए जोड़ना कहती है उन्हें धक्के मार कर घर से मत निकाल देना उनका ध्यान रखना मैं उन्हें तेरे हवाले छोड़ कर जा रही हूं तो उनकी सेवा करना उनका आशीर्वाद लेना फिर कहती है ठीक

है बेटा अब जाने का समय आ गया है फिर सबके आगे हाथ जोड़ती है और अपने प्राण त्याग देती है ।

मुझे मौत नहीं आती

कहते हैं परिवार भगवान की एक ऐसी देन है जो दुनिया के सभी रिश्तो से बढ़कर होता है ऐसे ही एक प्यारा सा परिवार था राज रानी का राजरानी पाकिस्तान के एक छोटे से गांव में रहा करती थी उसके परिवार में उसकी पांच बहनें दो भाई माता और पिता थे पाकिस्तान और हिंदुस्तान की लड़ाई के आंदोलन में राज रानी की माता की मृत्यु हो जाती है और उसका पिता अपने बच्चों को लेकर हिंदुस्तान आ जाता है वह अपने बच्चों का पालन पोषण बहुत अच्छे से करता है लेकिन उसके पास अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए धन न था इसलिए वह उन्हें पढ़ा ना सका जब राज रानी जवान होती है तो वह शादी के लायक होती है उसके पिता उसके लिए वर देखना शुरु कर देते हैं कुछ समय बाद वह उसके लिए अच्छा सा वर देखकर उसका विवाह कर देते हैं विवाह के कुछ वर्षों बाद राज रानी के पास एक सुंदर बेटी जन्म लेती है वह बहुत खुश होती है और उसका बहुत अच्छे से पालन पोषण करती है कुछ महीनों बाद वह गर्भवती हो जाती है इस बार उसने बेटा होने की उम्मीद लगाई थी लेकिन इस बार उसके पास बेटी हो जाती है ऐसे ही कई वर्ष बीत जाते हैं और उसके पास 5 लड़कियां हो जाती हैं वह अपनी उन पांच बेटियों को ही

अपने बेटे मानती है एक वर्ष बीतता है उसके पास एक सुंदर सा पुत्र जन्म लेता है और वह बहुत खुश होती है अब बच्चे बड़े हो रहे थे और उनके पालन पोषण के लिए पिता के कमाए पैसे कम पड़ गए फिर उसने खुद काम करना शुरू कर दिया वह लोगों के घर साफ सफाई का काम करती और अपने बच्चों का पालन पोषण करती दिन बीतते जाते हैं और अब उसकी बड़ी लड़की शादी के लायक हो जाती है राज रानी और उसका पति अपनी बड़ी बेटी के लिए वर देखने शुरू कर देते हैं वह जल्द एक लड़का देखते हैं और अपनी बड़ी बेटी की शादी उसके साथ कर देते है राज रानी की चिंता यहीं खत्म नहीं हो जाती अभी भी उसके सिर पर चार बेटियों की जिम्मेवारी थी वह और मेहनत करती हैं और धीरे–धीरे सभी बच्चों की शादी कर देती है अब उसके लड़के की भी शादी हो गई थी अब वह अपनी जिम्मेवारियों से मुक्त थी उसे कोई चिंता नहीं थी फिर एक दिन माता के शुभ नवरात्र आते हैं उसकी बहू माता के सारे व्रत करती हैं जब अंतिम नवरात्र आते हैं तब राज रानी का पति उस रात सभी को माता की कथा सुनाता हैं सुबह जब कंचकों का दिन आता है तो राज रानी का पति सुबह उठ कर नहा धोकर माता के ध्यान में बैठ जाता है उसे एकदम से हार्ट अटैक आता है और वह मर जाता है राज रानी बहुत रोती है क्योंकि वह अपनी अब अकेली रह गई थी इसी चिन्ता में उसे शुगर का भयंकर रोग लग जाता है कुछ वक्त बीतता है अब राज रानी की बहू के पास एक बेटा जन्म लेता है जो देखने में बहुत ही सुंदर था जब वह थोड़ा बड़ा होता है पढ़ने के लायक होता है तो उसे एक अच्छे स्कूल में दाखिला दिलवाया जाता है अब राजरानी का बेटा भी एक फौज का सरकारी कर्मचारी बन गया था कुछ वर्ष बीतते हैं और राजरानी की बहू के पास फिर से एक बेटा जन्म लेता है अब राज रानी के पास दो पोते हो जाते हैं और वह अपने छोटे से परिवार के साथ बहुत खुश थी

लेकिन अब उसे सिर्फ इस बात का दुख था कि उसका बेटा उसके पास नहीं था अभी पिता की चिता ठंडी नहीं हुई थी कि उसके घर उसके बेटे की मौत की खबर आ जाती है कि वह फौज की लड़ाई में शहीद हो गया है राज रानी पूरी तरह से टूट जाती है जिस बेटे ने उसकी अर्थी अपने कंधों पर उठानी थी आज उसी की लाश उसके आगे पड़ी थी बेटे की मौत के बाद उसकी तबीयत खराब रहने लगी कि एक तरफ पति का दुख और दूसरी और बेटे भी साथ छोड़ गया लेकिन अब राज रानी के पोते जवान होने लगे वह पढ़ लिखकर अच्छा काम करने लगे थे जब वह अपने दोनों पोतों को अपनी अपनी जिम्मेवारियां संभालते देखती है तो वह उनकी शादी करने की सोचती है फिर वह दोनों के लिए अच्छी लड़कियां देखकर दोनों की शादी कर देती है अब उसके पास अपनी बहू के साथ–साथ अपने दोनों पोतों की बहुए भी थी वह एक खुशहाल जिंदगी जी रहे होते है कि उनको उसकी सबसे छोटी बेटी की मौत की खबर मिलती है वह बहुत दुखी होती है तभी उसके दिमाग में आता है मेरे परिवार में हर साल किसी ना किसी की मौत हो रही है अब आगे क्या होगा उसे इस बात की चिंता रहने लगती है तभी कुछ दिन बाद उसके बड़े पोते के पास एक बेटी होती है जैसे उसके साथ हुआ था अब बिल्कुल वैसा ही उसके पोते के साथ भी हो रहा था हर वर्ष उसके पास एक बेटी ही जन्म लेती अब ऐसी ही उसके बड़े पोते के पास चार बेटियां हो जाती हैं और एक बेटी और एक बेटा छोटे पोते के पास होते हैं आज के दौर में बेटी और बेटा होना बहुत जरूरी है अगर घर में बेटी है तो बेटा भी जरूर होना चाहिए अब राज रानी भगवान से एक ही मांग करती है कि वह उनके पोते को एक बेटा भी दे दें और उन चार बहनों को एक भाई दे दें एक वर्ष बीतता है और राज रानी की एक बेटी के पति की मौत हो जाती है अब राज रानी का विश्वास और पक्का हो जाता है कि

कुछ तो गलत हो रहा है उनके परिवार में कहते है वहम का कोई इलाज नहीं होता ऐसा ही एक वहम राज रानी के मन में था और भगवान से अरदास करती है कि हे प्रभु मेरा पति इस दुनिया से चला गया और अब मेरे बच्चे भी जा रहे हैं तुम मुझे भी उठा ले पर मेरे बच्चों का दुख मुझे मत दिखा जिन बच्चों को मैंने जन्म दिया उन्ही बच्चों की मेरी आंखों के सामने मौत हो रही है मुझे इतना दुख मत दे मुझे भी उठा ले वह भगवान से अपनी मौत की मांग करती है और अब राज रानी इसी चिंता में बीमार रहती है ना कुछ खाती है ना कुछ पीती है एक बार राज रानी बहुत बीमार पड़ जाती है उसके दोनों पोते उसे अस्पताल में दाखिल करवाते हैं तभी डॉक्टर बताते हैं कि शुगर की बीमारी के कारण इनके एक हाथ में जहर फैल रहा है वह उसे दवाई से ठीक करने की कोशिश करते हैं लेकिन जहर और बढ़ जाता है, जहर इतना चढ़ जाता है की उस हाथ को काटने की नौबत आ जाती है डाक्टर उसके पोते को उसकी बाजू काटने की बात बताते हैं तो वह मना कर देता है फिर डॉक्टर उसे बोलता है अगर हमने उनकी बाजू ना काटी तो जान जाने का खतरा है यह सुनकर राज रानी का पोता घबरा जाता है और बाजू काटने की अनुमति दे देता है तभी डॉक्टर उसकी दादी की एक बाजू काट देता है बाजू कटवाने के बाद वह घर जाती है और भगवान के आगे बहुत रोती है क्योंकि अब तो उसकी एक बाजू भी ना रही वह रोती है और बार–बार भगवान से अपनी मौत की मांग करती है जब भी वह खाना खाने के लिए बैठती है तो उसे अपनी जिंदगी एक कुत्ते की तरह लगती है वह एक रोटी मुंह में डालती है और हाथ के साथ तोड़ती है वह एक हाथ से ही अपने कपड़े धोती है एक हाथ से ही नहाती है सब कुछ एक हाथ से ही करती है उसके पोतों की दोनों बहुएं उसकी सेवा तो करती हैं लेकिन वह भी अपने अपने बच्चों और परिवार में व्यस्त रहती हैं इसलिए वह स्वयं ही

अपना काम करती है अब राज रानी की भगवान से एक ही मांग थी कि वह मौत ! उसकी जिंदगी में बचपन से ही दुख था या सुख का तो कहीं नाम ही नहीं था पहले उसने बिना मां के जिंदगी गुजारी शादी के बाद पति मर गया फिर दो बच्चे मर गए सबसे बड़ा दुख उसके शरीर का एक अंग ही दूर हो गया अब वह दिन रात भगवान के भजन में लीन रहती है और अपनी मौत की मांग करती है।

प्यार की जीत

अपना सच्चा प्यार पाने के लिए लोग क्या–क्या नहीं करते सच्चा प्यार वही होता है जो शादी तक चले और शादी के बाद भी साथ निभाए और जब प्यार में मन भर जाए तो एक–दो साल बाद उसे छोड़ देना इसे प्यार नहीं मजाक कहते हैं ऐसे लोगों के धोखे से बहुत से लोगों की जिंदगी खराब हो सकती है अगर आप भी प्यार करते हैं तो उसे दिल से निभाओ अपने प्यार को इतना लंबा ले जाओ कि लोग आपके प्यार की मिसाल दें ऐसा ही सच्चा प्यार एक लड़की ने किया जिसका नाम ऐंजल था ऐंजल अमेरिका की रहने वाली थी उसके परिवार में उसके माता–पिता थे उनकी सिर्फ एक ही बेटी थी ऐंजल । ऐंजल अपने माता–पिता की लाडली लड़की थी वह अमेरिका की रहने वाली थी इसलिए वह खुले विचारों वाली लड़की थी उसकी एक मस्ती भरी जिंदगी थी वह स्कूल से आती खाती पीती और ऐश करती उसे घर के कामकाज की कोई फिक्र नहीं थी उसके पिता जी इतने अमीर थे कि उनके घर में हर काम के लिए एक नौकर था अब वह अपने स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद कॉलेज में दाखिला लेती है और अब उस पर जवानी भी आ गई थी वह अपनी खुशहाल जिंदगी जी रही होती है कि तभी उसकी जिंदगी में एक लड़का मुकेश आता है

मुकेश ने अभी–अभी इस कॉलेज में नया–नया दाखिला लिया है था मुकेश इंडिया का रहने वाला लड़का था वह अमेरिका में अपनी पढ़ाई के लिए गया था ऐंजल जैसे ही मुकेश को देखती वह उसे अपना दोस्त बनाने की सोचती है वो उसके पास जाती है अपना नाम ऐंजल बताती है तभी मुकेश उसके साथ हाथ मिलाकर उसे अपना नाम बताता है दोनों एक दूसरे को अपना अपना परिचय देते हैं कुछ समय बीतता है एंजेल और मुकेश एक अच्छे दोस्त बन जाते हैं अब एंजेल मुकेश को पसंद भी करने लगी थी लेकिन वह इस सोच में रहती थी कि वह उसे कैसे बताएं । कुछ समय बीतता है अब ऐंजल का जन्मदिन आता है ऐंजल अपने जन्मदिन की पार्टी में मुकेश को बुलाती है मुकेश उसे कहता है कि वह जरूर आएगा । शाम को मुकेश पार्टी में जाने के लिए तैयार हो जाता है और वह ऐंजल के लिए एक अच्छा सा तोहफा लेकर पार्टी में चला जाता है ऐंजल मुकेश को पार्टी में देखकर बहुत खुश होती है पार्टी खत्म होने पर ऐंजल मुकेश को अपने दिल की बात बताने की सोचती है और वह ऐसा ही करती है जैसे ही पार्टी खत्म होती है ऐंजल मुकेश को अपने प्यार के बारे में सब बता देती है और वह उससे शादी की मांग करती है ऐंजल की यह सब बातें सुनकर मुकेश साफ इंकार कर देता है और ऐंजल से कहता है कि मैं तो इंडिया में एक छोटे से गांव के रहने वाला लड़का हूं और तुम अमेरिका की रहने वाली हो तुम्हारे घर इतने नौकर चाकर है और मेरे घर का सारा काम मेरी मां करती है घर के काम के साथ–साथ में पशुओं की भी देखभाल करती है मुकेश की यह बात सुनकर ऐंजल उसे कहती है जो काम उसकी मां करती है वह शादी के बाद सारा काम करने को तैयार है ऐंजल की यह सब बातें सुनकर मुकेश को लगता है कि वे उसे सचमुच प्यार करती है और उसे ऐंजल की आंखों में प्यार की एक चमक दिखाई देती है वह उसी क्षण ऐंजल के प्यार को स्वीकार कर लेता कुछ समय

बीतता है और ऐंजल की पढ़ाई खत्म हो जाती है मुकेश भी पढ़ाई पूरी करने के बाद इंडिया अपने गांव में आ जाता है ऐंजल अब शादी के लायक हो गई थी ऐंजल के पिता अब ऐंजल की शादी करने के बारे में सोचते हैं वह उसके लिए वर देखना शुरु कर देते है जब इस बात का ऐंजल को पता लगता है तो वह अपने पिता से कहती है कि वह मुकेश से प्यार करती है और उसी से शादी करेंगी जब उसके पिता उसे मुकेश के बारे में पूछते हैं तो वह बताती है कि मुकेश एक पढ़ा–लिखा लड़का है वह इंडिया के एक छोटे से गांव में रहता है गांव का नाम सुनते ही उसके पिता यह शादी से मना कर देते हैं अपने बच्चों को उनसे ज्यादा उनके माता–पिता ही जानते हैं उन्हें पता होता है कि हमारे बच्चों के लिए क्या सही है क्या गलत है ऐंजल के पिता के भी यही विचार थे उन्हें पता था कि ऐंजल एक गांव में अपनी जिंदगी नहीं बिता सकती जब बच्चे माता–पिता की बात ना मानकर जिद पर अड़ जाए तो माता–पिता को उनकी बात माननी पड़ती है ऐसे ही ऐंजल के साथ हुआ जब उसके पिता ने शादी के लिए मना कर दिया तो वह रोती रोती अपने कमरे में चली जाती है अब तो उसने खाना पीना भी छोड़ दिया था वह किसी से बात भी नही करती थी बेटी की यह हालत उसके माता–पिता से देखी नहीं जा रही थी तभी एक दिन उसके पिता मुकेश को मिलने को बुलाते हैं जब मुकेश ऐंजल के घर आता है तो ऐंजल के पिता मुकेश से उसके बारे में पुछते है तो वह अपने बारे में बताता है कुछ देर की बातचीत के बाद मुकेश जाने का समय होता है तो ऐंजल के पिता उसे कहते हैं तुम हमें पसंद हो हमारी बेटी की खुशी में ही हमारी खुशी है लेकिन वह उसके आगे एक शर्ते रखते है ऐंजल के पिता उसे कहते हैं कि वह उन दोनों की शादी तो करवा देंगे लेकिन तुम्हें शादी के बाद अमेरिका में ही रहना होगा वह मुकेश से कहते हैं कि ऐंजल उनकी एकलौती बेटी है

आज जो कुछ भी हमारा है वह सब कुछ ऐंजल का ही है अगर तुम ऐंजल से शादी करना चाहते हो तो तुम्हें यही रहना होगा ऐंजल के पिता की सब बातें सुनकर मुकेश की शादी से साफ इंकार कर देता है वह कहता है कि मैं भले ही ऐंजल से प्यार करता हूं लेकिन मेरा पहला प्यार मेरे माता–पिता हैं जैसे आप लोग अपनी बेटी से प्यार करते हैं वैसे ही मेरे माता–पिता मुझसे कम प्रेम नहीं करते आपकी बेटी मेरा कुछ वक्त पहले का प्यार है लेकिन मेरे माता–पिता ने मुझे बचपन से पाला है मैं उन्हें कैसे छोड़ दूं ऐंजल के पिता को मुकेश की बातें अच्छी लगती है और वह भावुक हो जाते है और शादी के लिए मान जाते हैं कुछ समय बाद ऐंजल और मुकेश की शादी हो जाती है वह अपने ससुराल जाती है तो उसे शुरु शुरु में बहुत सही मुश्बितों का सामना करना पड़ा क्योंकि जो ऐश उसे अमेरिका में मिलती थी वह गांव में नहीं थी जब ऐंजल के माता–पिता पहली बार ऐंजल को मिलने आते हैं तो वह उसे देखकर दुखी होते हैं क्योंकि वह देख रहे थे कि ऐंजल से घर की जिम्मेदारी नहीं संभल रही थी क्योंकि ऐंजल ने कभी कुछ काम किया ही नही था अब माता–पिता क्या कर सकते हैं ऐंजल ने अपनी मर्जी से यह शादी की थी वह ऐंजल के ससुराल में कुछ वक्त रुकते है और चले जाते हैं कुछ समय बीतता है जब ऐंजल धीरे–धीरे घर की सारी जिम्मेवारियां सम्भालने लगी थी अब उसे घर का काम करने में कोई दिक्कत नहीं आती थी और वह घर का सारा काम खुशी खुशी थी करती जब उसके माता – पिता दूसरी बार उससे मिलने आते है तो अपनी बेटी को खुशी खुशी जिम्मेवारियां सम्भालते देखकर बहुत खुश होते है अब उन्हें किसी चीज की कोई चिंता नहीं थी अब ऐंजल और उसका पति खुशी से अपनी जिंदगी जीने लगे ।

मुसीबत का वक्त

मुसीबत एक ऐसी चीज है जो हमें अपने और पराए की पहचान करवाती है आज जिस इंसान को हम निच समझ कर ठुकरा देते हैं हो सकता है कल वही इंसान भगवान के रूप में हमारी मदद के लिए आ जाए जब किसी इंसान पर मुसीबत पड़ती है तो वह अमीरी गरीबी नहीं देखती ऐसी मुसीबत पड़ी थी एक रोहित नाम के लड़के पर रोहित दिल्ली का रहने वाला था उसके परिवार में उसके माता पिता बहन और दादी रहते थे और रोहित की बहन दसवीं कक्षा में पढ़ने वाली एक अच्छी छात्रा थी लेकिन रोहित का पढ़ाई में मन नहीं लगता था इसलिए रोहित ने सातवीं कक्षा में ही पढ़ाई छोड़ दी वह अपनी मां से बहुत प्यार करता था लेकिन उसकी मां अक्सर बीमार रहा करती थी कुछ समय बितता है रोहित की बहन अब जवान हो रही थी रोहित के पिता उसकी मां से कहते कि हमारी बेटी अब शादी के लायक हो रही है हमें इसके लिए वर देखना शुरू कर देना चाहिए और वह दोनों अपनी बेटी के लिए एक अच्छा सा वर तलाश करते हैं कुछ समय बाद वह अपनी बेटी के लिए एक अच्छा सा वर तलाश कर उसकी शादी की तैयारी में लग जाते हैं अब तो रोहित की बहन की शादी के कार्ड भी छप चुके थे शादी के कार्ड छपने के बाद रोहित की मां अपने रिश्तेदारों के घर कार्ड देने जाती है जब वह अपनी बहन के घर कार्ड देने

जाती है तो उसकी तबीयत खराब हो जाती है रोहित की मासी उसे हॉस्पिटल लेकर जाती है तो वह रास्ते में ही अपना दम तोड़ देती है यह बात सुनकर रोहित को और उसकी बहन को बहुत दुख होता है कुछ दिन बीतते हैं अब तो रोहित की बहन की शादी के दिन भी नजदीक आ गए थे। वह शादी करने से इंकार कर देती है लेकिन अब तो शादी के कार्ड छपकर बंट भी गए थे इसलिए वह अपने पिता के समझाने पर मान जाती है और कुछ समय बाद उसकी शादी हो जाती है अब रोहित अकेला पड़ गया था एक और उसे अपनी मां की मृत्यु का गम था और दूसरी और उसकी बहन भी पराए घर वाली हो गई थी अपनी मां के गम में उसने अब शराब भी पीनी शुरू कर दी थी रोहित की दादी अब बजुर्ग हो गई थी वह घर का कामकाज नहीं कर सकती थी इसलिए उसने अपने बेटे की दूसरी शादी करवा दी और रोहित को उसकी सौतेली मां का घर आना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा वह अब घर में कम ही आता अपने ज्यादा समय बाहर ही अपने दोस्तों के साथ बिताता उसने अपने दोस्तों को ही अपनी जिंदगी समझ लिया था रोहित की सौतेली मां उसके घर का सारा काम करती वह रोहित को एक मां का प्यार देने की कोशिश करती लेकिन वह उसे पसंद ना करता और उससे दूर भागता वह शराब के नशे में इतना अंधा हो गया था कि उसे अपने रिश्तो की भी समझ ना थी वह दोस्तों के साथ ही खुश रहता, बेटे का यह हाल देखकर रोहित के पिता बहुत दुखी होते एक दिन उन्हें दिल दिल का दौरा पड़ता है और उनकी मौत हो जाती है पिता की मौत के बाद रोहित को बहुत दुख होता है वह और भी ज्यादा बिगड़ता जाता है पिता की मौत के बाद भी रोहित के रिश्तो की समझ ना आई अब वह जवान भी हो चुका है और विवाह के लायक भी हो जाता है उसकी दादी और उसकी मां उसकी शादी के लिए लड़की देखना शुरु करते हैं लेकिन रोहित के शराबी होने के कारण कोई

अपनी बेटी उनके घर देने के लिए राजी नहीं होता रोहित की दादी को बस इसी बात की चिंता रहती है कि अगर उसे कुछ हो गया तो उसके पोते को कौन संभालेगा इसी चिंता में वह अक्सर बीमार रहने लगती है फिर एक दिन उसकी तबीयत इतनी खराब हो जाती है और उसकी मृत्यु हो जाती है अब रोहित को सहारे की जरूरत थी लेकिन अब तो उसके दोस्त भी उसका साथ छोड़ गए थे जब तक रोहित का परिवार उसके साथ था तब तक उसके दोस्त ही उसके अपने थे अब जब रोहित के पास कुछ ना बचा तब उसके दोस्त भी अपना रंग दिखाने लगी अब तो रोहित की बुआ ने भी अपना रंग शुरू कर दिया था वह अपने भाई के एक छोटे से घर में से हिस्से की मांग करने लगे वह रोहित से पैसे की मांग करने लगी और रोहित के मना करने पर उसे मारने पीटने लगी रोहित का इस दुनिया में उसे बचाने वाला कोई ना था उसकी सौतेली मां भी अब बदल गई थी अब रोहित भी बदल चुका था उसने अब शराब पीना भी छोड़ दिया था वह सहमा सहमा सा रहने लगा उसे अब हर वक्त टेंशन रहती इसी टेंशन में ही उसने दो बार आत्महत्या करने की सोची दूसरी और मां–बाप ना होने के कारण रोहित की बहन के ससुराल वाले भी उसे तंग करने लगे वह उसे रोहित के पास मिलने नहीं जाने देते थे अब रोहित बिल्कुल अकेला पड़ गया था रिश्तेदारों ने भी उसका साथ छोड़ दिया था लेकिन कहते हैं जिसका कोई नहीं होता का भगवान होता है कुछ समय बीतता है और रोहित की बहन उसके लिए एक अच्छी लड़की देखकर उसकी शादी करवा देती है अब कुछ वर्षों बाद रोहित के पास एक सुंदर सी लड़की जन्म लेती है अब वह अपने परिवार का अच्छे से पालन पोषण करता है और खुशी–खुशी अपना जीवन बिताता है

मत कर आत्महत्या

दुनिया से दुखी हो गया हूं
अब आत्महत्या करने जा रहा हूं
ऊपर जाकर चैन की सांस लूंगा
यहां तो मैं दुखी ही दुख पा रहा हूं

कभी गम बेटी का
तो कभी बेटा दुखी करता है
सहन नहीं होते हैं इनके बोल
इसी गम में हर दिन एक इंसान मरता है

ले लेता है कोई फांसी
तो कोई गाड़ी के नीचे कट जाता है
अपनों के लिए गवां बैठते हैं अपनी जिंदगी
और उनके जाते ही उन्हें धन बट़ जाता है

किसी को है कर्ज का गम
तो किसी की प्रेम कहानी रह गई अधूरी

इसी दुख में हर कोई मर रहा है
नहीं जी रहा अपनी जिंदगी पूरी

किसी को मारती है सौतेली मां
तो किसी की पत्नी कर देती है तंग
नहीं रहता काबू खुद पर कर लेता है आत्महत्या
जब दुनिया दिखाती है अपने रंग

किसी को इतना दुखी मत करो
कि वह कुछ कर जाए
इतना दुख मत भरो अपनों की जिंदगी में
कि वह तुम्हें से दुखी होकर मर जाए

दुनिया से दूर हो कर तु क्या ले जाएगा
यहां सब होंगे सुखी और ऊपर तू अकेला पछताएगा

मेरा तो यही है कहना सदा के लिए किसी ने ही नहीं रहना
जितनी जिंदगी मिली है जी ले
सहले दुनिया की कड़वी बातें
तू सब्र का घूंट पी ले

आज के युग में इंसान के पास हर समस्या का एक ही हाल है जो है आत्महत्या क्या यह सही है ? नहीं यह सही नहीं है भगवान ने अगर हमें एक अनमोल जीवन बक्शा है तो हमें वह पूरा जीना चाहिए हर मुसीबत का हल मौत नहीं होता अगर हमें कोई परेशान करें तो हमें उसका सामना

करना चाहिए ऐसी ही एक कहानी कविता के तौर पर बनाई गई है जिसमें वह कहता है कि अब मैं दुनिया से दुखी हो गया हूं और मैं मरने जा रहा हूं इस दुनिया से तो मुझे दुख ही दुख मिल रहा है अब मैं ऊपर जाकर चैन से सांस लेना चाहता हूं कभी मुझे बेटी दुखी करती है कभी बेटा दुखी करता है इनके कड़वे बोल मुझसे सहे नहीं जाते हर एक दिन इसी दुख में कोई ना कोई मरता है कोई फांसी ले लेता है तो कोई गाड़ी के नीचे कट कर अपने प्राण त्याग देता है वह अपनी इस दुनिया के लिए अपने परिवार के लिए अपनी जान से हाथ धो बैठता है और उसके मरने के कुछ दिन बाद ही उसका कमाया हुआ सारा धन बंट जाता है किसी को अपने कर चुकाने का गम है तो किसी का प्यार अधूरा रह जाता है इसी दुख में हर दिन एक इंसान मर रहा है वह अपनी पूरी जिंदगी नहीं जी रहा किसी को सौतेली मां मारती है तो कोई अपनी पत्नी से दुखी है जब इंसान इन सबसे दुखी हो जाता है तो उसे खुद पर काबू नहीं रहता और वह आत्महत्या कर लेता है हमें किसी को इतना दुखी नहीं करना चाहिए कि वह मौत के घाट उतारने के लिए मजबूर हो जाए लेखिका कहती है कि इन सब चीजों को देखकर मेरा तो यही कहना है कि इस संसार में सदा के लिए किसी को नहीं रहना अगर हमें भगवान ने जन्म दिया है तो वह लेकर भी जरूर जाएगा इसलिए हमें इस दुनिया की कड़वी बातें सहन करके अपनी जिंदगी जीनी चाहिए और सब्र के घूंट पी लेने चाहिए

जा रही तुझे छोड़कर

जा रही हूं तुझे छोड़कर
अब सुख की सांस ले लेना
हो सके तो कोशिश करना
मेरे साथ बिताए कुछ पलों को याद कर लेना

मेरे जाने के बाद
ना कोई तुझे सताएगा ना रुलाएगा
शुक्र मना छुट रहा है मुझसे पीछा
अब कोई बिन मतलब तुझ पर हक नहीं जताएगा

तुझे अपना माना था
इसलिए तुझ पर हक जताती थी
कोई ना था मन हल्का करने को
दिल की हर बात तुझे बताती थी

तूने मेरी बात ना मानी

और ना ही मेरी कदर जानी
गलतफहमी का शिकार हो गया
और करता रहा अपनी मनमानी

मेरे जाने के बाद
कौन तुझसे रूठेंगा
और कौन तुझे मनाएगा
जैसे तूने मुझे सताया
एक दिन तुझे कोई सताएगा

आज तक मुझे लारों में रखा
और करता रहा मुझे तंग
याद सताएगी मेरी उस दिन
जब तेरा दूजा प्यार दिखाएगा अपने रंग

भगवान करे कि तुझे मेरी इतनी याद सताए
एक और तो तुझे याद करके रोए
और दूसरी ओर तेरा प्यार भी तुझे छोड़ जाए

जिस कदर तूने मुझे सताया
वो भी तुझे वैसे ही तड़पाए

जो इंसान एक का ना हो सका
वह दर–दर भटकता है
थक जाता है जब भटक भटककर

तब वह सच्चे प्यार के लिए तड़पता है

हर इंसान एक जैसा नहीं होता
कोई तो तुझे सबक सिखाएगा
लूटा है जिस कदर तूने मुझे
कोई तुझे भी वैसे ही लूट जाएगा

शादी के वादे मेरे साथ
और दुल्हन बनाया किसी और को
मुझे किसी लायक ना समझने वाले
काश तु भी ना भाये किसी और को

इश्क एक ऐसी चीज है जिसे यह लग जाए तो उस इंसान की जिंदगी बदल देता हैं लेकिन अगर यह गलत इंसान से हो जाए तो जिंदगी उजाड़ भी सकती है ऐसी ही एक प्रेम की कहानी है जब प्रेमी अपनी प्रेमिका के साथ कुछ समय बिताकर किसी और से प्यार करने लगता है और उसे छोड़ने की बात करता है तो वह कहती है कि मैं तुझे छोड़ कर जा रही हूं अब तुम सुख की सांस ले लेना और वह कहती है हो सके तो कोशिश करना जो तूने मेरे साथ पल बिताए हैं उनको याद कर लेना कहती है कि मेरे जाने के बाद ना तो तुझे कोई रुलाएगा और ना ही सताएगा अब तो शुक्र कर की मुझसे तेरा पीछा छूट रहा है अब बिना मतलब तुझ पर अपना हक नहीं जताएगा मैंने तुझे अपना माना था एक लड़की जब किसी से प्यार करती है तो वह उसे अपना सबकुछ मान लेती है उसके साथ बहुत सी उम्मीदें जोड़ लेती है इसलिए उस पर अपना हक

जताती है उसका मन हल्का करने के लिए कोई नहीं आता फिर उसे कोई अपना नहीं लगता वह अपने प्रेमी को ही दिल की हर बात बताती है फिर वह कहती है कि ना तो तूने मेरी बात मानी ना ही मेरी कदर कि तु गलतफहमी का शिकार होकर अपनी मनमानी करता रहा कहती है कि मेरे जाने के बाद कौन तुझसे रूठेगा और तुझे रूठे को कौन मनाएगा जैसे तूने मुझे सताया है तंग किया है एक दिन मेरे बदले कोई और लेगा और तुझे रुलाएगा आज तक तूने मुझे लारों में रखा है और मुझे तंग किया जब तुझे तेरा दूसरा प्यार सताएगा और अपने रंग दिखाएगा उस दिन तुझे मेरी याद सताएगी मेरी भगवान से यही विनती है तुझे मेरी बहुत याद आए एक तरफ तो मुझे याद करें रोए और दूसरी तरफ तेरा दूसरा प्यार भी तुझे छोड़ कर चला जाए जैसे मैं तेरे प्यार में तड़पी हूं तु भी वैसे ही तड़फे जो एक इंसान का नही हो सका वह किसी का नहीं हो सकता एक को छोडेंगा तो दूसरे का हो जाएगा ऐसे ही दर दर भटकता है जब वह इस खेल में थक जाता है तो सच्चा प्यार ढूंढता है लेकिन उसे सच्चा प्यार नहीं मिलता हर इंसान एक जैसा नहीं होता धोखेबाज इंसान को एक दिन धोखेबाज जरूर मिलता है और उसे ऐसा सबक सिखा कर जाता है जो उसे सारी जिंदगी याद रहता है जैसे वह अपने पहले प्यार को लूटता है एक दिन कोई उसे लूटने वाला आता है फिर वह कहती है कि तूने मेरे साथ शादी के वादे किए और अपनी दुल्हन किसी और को बना लिया तूने मुझे किसी लायक नहीं समझा था अब जिससे तूने शादी की क्या वह मुझसे काबिल थी बहुत से लोग होते हैं जो हमें अपने काबिल नहीं समझते और हमें छोड़ देते हैं इसी गम में बहुत से लोग अपनी जिंदगी रो–रोकर निकालते हैं या मौत के घाट उतर जाते हैं उन्हें यह सब ना करके एक काबिल इंसान बनना चाहिए इतना बड़ा बन जाना चाहिए कि

छोड़ने वाले को पछतावा हो कि किसी को छोड़ जाने के बाद रोने की वजह इतनी ऊंचाई को छू लो कि वह सारी जिंदगी पछताता रहे ।

रोटी के पीछे दुनिया
दिन–रात भागती है
सोती नहीं रात में
दिन में भी जागती है

इंसान चैन से नहीं बैठता
और करता है सिर्फ पैसा पैसा
हे दुनिया बनाने वाले
तेरा खेल है ये कैसा

अमीरों से ज्यादा
गरीब लोग ही है अच्छे
सोचते हैं सबका भला
फिर चाहे बड़ा हो या बच्चे

गरीब के पास एक रोटी होगी
तो आधी तेरे मुंह में डाल जाएगा
अमीर के पास होगा लाखों का धन

तो भी तुझे धक्का मारकर भगा देंगा।

अमीरी गरीबी तो है
कर्मों का फल
करता फिरत है पैसा पैसा
तू ही बता किसने देखा है आने वाला कल
अमीर दाल की रोटी खाता है
दाल रोटी ही खाता है गरीब
फिर किस बात का है घमंड
जो गरीब को आने नहीं देता करीब

माता पिता की सेवा करले
मत कर मेरी मेरी
एक दिन मिट्टी में दफनाया जाएगा
फिर क्या औकात रह जाएगी तेरी

अमीर को लगाकर गले से
गरीब को अकड़ तू दिखाता है
मुझसे अमीर यहां कोई नहीं
इस बात का घमंड तू जताता है

जब होगा तेरा जीवन पूरा
और तुम भगवान के पास जाएगा
ले जाएगा वहां अपने ही कर्म
फिर किसे अपना पैसा दिखाएगा

वहां पैसे से अमीर
और कर्मों से गरीब हो जाएगा
कर्मों का खाता जब खुलेगा तेरा
तो तुझे नर्क में डाला जाएगा

सुख–दुख अमीरी गरीबी तो कर्मों का फल है फिर हम इंसान इन बातों में इतना भेदभाव क्यों करते हैं क्या एक गरीब इंसान में जान नहीं होती इसी फर्क को देखते हुए लेखिका कहती है कि दुनिया दिन–रात रोटी कमाने के लिए भागती फिरती है वह दिन में भी चैन नहीं बैठती और रात में भी जागती है इंसान चैन से नहीं बैठता और सारी उम्र पैसा पैसा करता फिरता है हे दुनिया बनाने वाले भगवान तूने यह कैसा खेल रचाया है फिर वह कहती है अमीर लोगों से अच्छे तो गरीब लोग ही लोग ही होते हैं वह सब का भला सोचते हैं फिर चाहे बड़े हो या बच्चे अगर गरीब के पास एक रोटी होगी तो वह आधी भी तुम्हारे मुंह में डाल देगा अगर तुम अमीर से रोटी लेने को जाओगे तो उसके पास धन होने के बाद भी वह तुम्हारे लिए अपने घर के दरवाजे बंद कर लेगा और तुम्हें धक्के मार देगा अमीरी गरीबी तो कर्मों का फल है फिर भी इंसान पैसा पैसा करता फिरता है लेकिन उसे यह नहीं पता कि आने वाला कल किसने देखा है अमीर भी दाल की रोटी खाता है और गरीबी भी दाल की रोटी खाता है फिर एक अमीर इंसान किस बात की घिन करता है जो गरीब इंसान को अपने के पास नहीं आने देता तू मेरी मेरी ना करके अपने माता पिता की सेवा करले जब तू मर जाएगा और मिट्टी के नीचे होगा तो तेरी क्या औकात रह जाएगी अमीर को तो खुशी–खुशी गले से लगाता है और गरीब को अपने पैसे की अकड़ दिखाता है और सोचता है कि इस दुनिया में मुझसे अमीर कोई नहीं तू हर किसी को अपनी अमीरी का घमंड दिखाता फिरता है जब तेरा जीवन पूरा हो जाएगा तो भगवान के पास जाएगा वहां कर्म

देखे जाते हैं पैसा काम नहीं आएगा तेरा फिर किसे दिखाएगा अपने पैसे वहां तो पापी कहलाएगा कर्मों से गरीब पैसे से अमीर होगा कर्मो का खाता कम होगा तेरा इसी पाप को देख कर तुझे नर्को में जगह मिलेगी ।

बेटी

अपने माता–पिता को पूछते नहीं
और पंडित को खीर खिलाते है
अपनी बेटी को बचाते हो बुरी नजर से
और पराई पर आंख घडाते हो

अपनी बेटी को पलकों पर
और पराई की बेटी को कांटो पर रखते हो
अपनी बेटी की लाज बचा कर
पराई बेटी की बेईज्जती करते हो

करते हो अपनी बेटी की रक्षा
पराई बेटी के दांव पर लगाते हो
पराए धन को लूटकर अपनी बेटी के हाथों में मेहंदी रचाते हो

बेटियों को समझो सम्मान
और उनकी इज्जत करो
लूट लूट कर प्राय धन को
अपने लिए पाप के घड़े मत भरो

नारी एक शक्ति है
इसे सम्मान दो
नहीं संभलता जब पुरुष अपनी हरकतों से
बन जाती है नारी काली
और धरती को पाप वहीन करती है

दुष्टों का नाश करने के लिए
धर लेती है दुर्गा का रूप
नारी की इज्जत ना करने वाले को यही खबर नहीं होती
कि एक नारी के होते आठ स्वरुप

हर सुख–दुख हंसकर सह लेती है
लेकिन बात आती है जब आत्मसम्मान पर
तब वह नहीं सहती
दुष्टों का नाश कर देती है
नारी एक वरदान है
इसे हंसकर स्वीकार करो
मत करो उसे दुखी
उसकी झोली खुशियों से भरो

मुस्कुराता है भगवान
भर जाती है धन से पेटियां
वो घर कभी खाली नहीं होता
जिस घर में खिलखिलाती हैं बेटियां

जब भगवान किसी इंसान को कर्मों से बहुत खुश होता है तो वह उसे एक बेटी के रूप में अनमोल वरदान दे देता है जब हम उस अनमोल वरदान का आदर ना करते हुये उसका अपमान करते हैं अर्थात अपनी और पराई बेटी में फर्क करना शुरू कर देते हैं तब हमें ऐसी भयानक सजा मिलती है कि हम सोच भी नहीं सकते ऐसे ही कुछ शब्दों को ध्यान में रखते हुए लेखिका ने एक कविता के माध्यम से लोगों को वह बात समझाने की कोशिश की है जिसमें वह समझाती है कि जब तक हमारे माता–पिता हमारा साथ हैं हम उनकी सेवा नहीं करते उन्हें रोटी नहीं पूछते और जब वह संसार से चले जाते हैं तब हम पंडितों को खीर खिलाते हैं कि हमारे बुजुर्गों तक पहुंच जाए अपनी बेटी को हम हर बुरी नजर से बचाते हैं और दूसरों की बेटियों को हम गंदी नजर से देखते हैं अपनी बेटी को हम प्यार देते हैं और पराई बेटी को हम नकारते है गालियां देते हैं अपनी बेटी की हम लाज बचाते हैं और पराई बेटी को अपना भोग बनाने की कोशिश करते हैं अपनी बेटी की रक्षा करते हैं पराई बेटी को दांव पर लगाते हैं हम पराए धन की इज्जत लूट कर अपनी बेटी के हाथों में मेहंदी रचाते हैं हमें बेटियों को सम्मान देना चाहिए और उनकी इज्जत करनी चाहिए पराए धन को लूट लूट कर पाप के घड़े में नहीं भरने चाहिए क्योंकि इस पाप की सजा बहुत भयानक होती है नारी भगवान का दिया हुआ एक वरदान है एक शक्ति है हमें इसे सम्मान देना चाहिए और जब कोई इंसान अपनी हरकतों से बाज नहीं आता तो वह काली का रूप धारण करके उसका नाश कर देती है और वह दुष्टों का नाश करने के लिए दुर्गा का रूप धर लेती है जो इंसान नारी की इज्जत नहीं करता उसे शायद यह बात नहीं पता होता कि नारी के आठ स्वरुप होते हैं और एक औरत पर कितनी भी मुसीबतें क्यों ना आ जाए वह हंस कर सह लेती है लेकिन जब बात उसके आत्मसम्मान पर आती है उसकी इज्जत पर आती है तो उस दुष्ट

इंसान का नाश कर देती है नारी एक वरदान है इसे हंसकर स्वीकार करना चाहिए एक औरत अपना असली घर छोड़ कर तुम्हारे घर आ जाती है और तुम्हारे हर सुख दुख में चट्टान की तरह तुम्हारे साथ खड़ी होती हैं और एक व्यक्ति का यह फर्ज है कि अपनी पत्नी को परेशान ना करते हुए उसकी झोली में खुशियों के मोती भर देने चाहिए उस वक्त ईश्वर भी मुस्कुराता है और हमारे घर को खुशियों से और धन से भर देता है वह घर कभी खाली नहीं होता जहां बेटियां खिलखिलाती है।

जैसा बीज बोया वैसा फल पाएगा
ठुकरा देंगे सभी रिश्ते जब तू इस दुनिया से जाएगा
आज जिसे तू कहता है बेटी बेटी
कल वही बेटी तुझे धोखा देकर भाग जाएगी
बिठाया था जिसे तूने पलकों पर
कल वही कांटो पर बिठाकर सताएगी ।

आज जिन पोतों को तूने अपना माना है
कल वही तुझे रंग दिखाएंगे
जिन के प्यार में भगवान को भुला दिया तूने
कल वहीं तुझे नर्को में लटकाएंगे

आज जिस पत्नी को तू कहता है मेरी मेरी
कल उसी की मर्जी होगी
जल जाएगा शरीर
गल जाएगी हड्डियां तेरी

बनाया हैं आज
जिस बहु को तूने बेटी
तरसेगा पानी को
नहीं देगी तुझे रोटी

करता फिरता है तू मेरे नाता नाती
रिश्ते खत्म हो जाएंगे उस दिन
जिस दिन ऊपर जाएगी ज्योति

जिस पति के साथ की है तूने जिंदगी की रस्में
कंधों पर बिठाकर छोड़
आएंगे तुझे असली घर
टूट जाएगी सारी कसमें

नहीं देंगे साथ तेरे बेटे भी
घमंड करता है जिनका
अकेला छोड़ आएगा तुझे श्मशान में
और तोड़ आयेंगे तिनका

धरी रह जाएगी माया
पैसा भी काम नहीं आएंगे
एक भी चीज तेरी घर में नहीं रहने देंगे
तेरे कपड़ों की पोटली भी तेरे पास छोड़ जाएंगे

जिस घर सब तुझे अकेला छोड़ जाएंगे

अगर उस वक्त भी तू याद करें
तो भी प्रभु तेरे हाथ थामने जरूर आएंगे
ले जाएंगे तुझे अपने संग
इस जन्म मरण के चक्कर से तुझे छुडवायेंगे

हमें अपने कर्मों का हिसाब इसी जीवन में देना होता है अगर हम अपना सारा जीवन लोगों का दिल दुखाने उन्हें लूटने में या गलत काम में लगा देते हैं तो हमें इसी जन्म में उसका भुगतान करना होगा अगर हम इस जीवन में लोगों की भलाई में अच्छे कार्यों में लगा देते हैं तो हमें इस जीवन में कभी ना कभी उसका फल जरुर मिलेगा अपनी जवानी में हम जैसा भी बीज बोते हैं बुढ़ापे में वैसा ही फल काटने को मिलेगा जब इंसान इस दुनिया से जाएगा उस वक्त उसे दुख मिलता है उस दुख को हमारे अपने चाहकर भी नहीं बांट सकते वह बैठे देखते रहते हैं और इंसान दुख झेलता रहता है और कुछ समय बाद अपने प्राण त्याग देता है इन्हीं सब बातों का ध्यान रखते हुए लेखिका अपने मन का भाव एक कविता द्वारा प्रस्तुत करती है जिसमें वह बताती है कि जिन्हें हम आज अपने सच्चे रिश्ते मानकर बैठे हैं उन रिश्तो में हम अपना असली रिश्ता तो हमारा भगवान के साथ है उसे भूले बैठे हैं इस जीवन में हमारा साथ वही देगा जिसके लिए हमने कुछ किया हो बिना स्वार्थ के यहां कोई साथ नहीं देता । फिर वह कहती है कि जिसे आज तू अपनी बेटी माने बैठा है कल वहीं बेटी तुझे धोखा दे जाएगी और तुझे दुखों की नगरी में छोड़ जाएगी आज के युग में प्रेम की कहानियां इतनी बढ़ गई है कि जो लड़की भी इसका हिस्सा बनती है एक दिन उसे अपने प्यार या पिता इनमें से कोई एक को चुनना पड़ता है और जब वह अपने पिता को छोड़ प्यार का दामन पकड़ लेती है तो वह अपने पिता की बाकी की जिंदगी में

कांटे बिछा जाती है और वह उसके साथ किए गए प्यार दुलार को सारी जिंदगी याद करके रोता है आज जिन पोतों को हम अपना माने बैठे हैं उनके इश्क में भगवान को भुला देते हैं हम उनके प्यार में भगवान को याद नहीं करते और एक दिन उनके प्यार में नर्को में लटक जाते हैं फिर वह कहती है जिस पत्नी को तू आज मेरी कहता है जब तू मर जाएगा उसी की मर्जी से तुझे जलाया जाएगा और वह खुद तुझे श्मशान में जलता छोड़ आएगी और वह कर भी क्या सकती है उस वक्त वह चाहकर भी अपने पति को घर नहीं रख सकती आज जिस बहू को हम बेटी बनाकर घर में लाते हैं जब तक हमारे पास धन होता है तो वह हमारी बेटी है जैसे ही हमारा धन हमारे बेटे का होता है तो वह बहू बन जाती है हम पानी को तरसते रहते हैं वह हमें रोटी भी नहीं देती आज जिस नाता नाती को हम अपना माने बैठे हैं बहुत से लोग यह भी कह देते हैं कि हम तो इन्हीं के सहारे बैठे हैं कल जब हमारी आत्मा ऊपर जाएगी फिर भले ही हमारा शरीर उनके सामने पड़ा हो तो उस वक्त हमारे सारे रिश्ते उनसे टूट जाते हैं ना हम उनके कुछ लगते हैं और ना वो हमारे, जिस पति के साथ हम जिंदगी की हर रस्म करते हैं उसी पति के कंधे पर एक दिन हमारी अर्थी होती है और वह अपने असली घर खुद छोड़ आता है और हमें अपने उस समय तेरी उसके साथ की गई हर कसम टूट जाएगी उस समय तो तेरे बेटे भी तेरा साथ नहीं देंगे जिनका तूने सारी उम्र घमंड किया वो भी तुझे श्मशान में अकेला छोड़ आएंगे और तिनका तोड़ आएंगे तेरी माया भी यहीं रह जाएगी और कमाया धन भी काम नहीं आएगा घर में भी तेरी कोई चीज नहीं रखी जाएगी यहां तक कि तेरे पुराने कपड़ों को भी एक पोटली में बांधकर तेरे पास छोड़ आएंगे जिस घर में सारी दुनिया तुझे अकेला छोड़ आएंगी जिस दुनिया के

चक्कर में तूने भगवान को याद नहीं किया अगर उस वक्त भी उसे याद करेगा तो वो जरूर आएगा और तुझे अपने साथ ले जाएगा।

मेरी मां सुखप्रीत कौर एक मेडिकल स्टूडेंट लुधियाना शहर की रहने वाली थी उसका सारा जीवन सुकून और खुशियों से भरा था मेरी मां मेरे नाना–नानी की लाडली बेटी थी उनको बचपन से ही अपने माता–पिता से बहुत प्यार मिला है लेकिन उनके लिए उनका आत्मसम्मान बहुत मायने रखता था उनका कहना था कि हमें इस दुनिया में रहते हुए अपने संस्कारों की और पूरा ध्यान देना चाहिए मां की शादी के बाद उनका एक ही सपना था कि मेरे पास एक बेटी हो जाए जैसे मुझे मेरे माता पिता ने पलकों पर बिठाया है मैं भी उसे वैसे ही लाड़ दुलार करुँ फिर एक वर्ष बाद जब मैं हुई तो उन्होंने मुझे वैसे ही प्यार किया जैसे उनके माता–पिता ने उन्हें दिया था मेरे जन्म के बाद उनके पावॅ धरती पर नहीं लग रहे थे मानो उन्हें कुदरत ने एक अनमोल खजाना दे दिया हो उन्होंने मुझे एक परी की तरह महफूज रखा जैसे एक धनी व्यक्ति अपनी दौलत को रखता है मेरे रोने की एक चीखं पर वह ऐसे घबरा जाती जैसे मानो उनके शरीर का कोई टुकड़ा निकल कर बाहर आ गया हो एक वर्ष बाद जब मेरे मुंह से पहला शब्द मां निकला तो वह भावुक होकर रोने लगी मेरी मां ने अपना सारा जीवन मुझ पर निछावर कर दिया था मानो उनके जीवन का केवल मैं ही एक मकसद थी जब मैं दो वर्ष की हुई तो मुझे पढ़ाने लगी क्योंकि वह मुझे एक काबिल डॉक्टर बनाना चाहती थी मेरे

जन्मदिन आने पर उनके पैर धरती पर नहीं लगते वह मेरा जन्मदिन एक परी की तरह मनाती थी मेरी छोटी छोटी बातों का पूरा ध्यान रखती मेरी मां चाहती थी कि मेरा पूरा जीवन खुशियों में बीते कुछ वर्षों और मैं 5 साल की हुई इन 5 वर्षों में मुझे मेरी मां से बहुत प्यार मिला लेकिन किसने सोचा था कि हम बिछड़ जाएंगे मेरे 5 वर्ष होने के बाद मेरी मां मुझे इस दुनिया में अकेला छोड़ कर चली गई उस समय मुझे सिर्फ अपने पिता का सहारा था मेरी मां के इस दुनिया से जाने के कुछ समय बाद मेरे पिता ने दूसरी शादी कर ली उस समय जब मैंने अपने पिता से पूछा कि यह कौन है तो उन्होंने मुझे बताया कि यह तेरी नई मां है उस समय मुझे इतनी समझ नहीं थी और ना मां के जाने का गम था नई मां के घर में आने पर मैं खुश हुई उस समय मेरी सोच यह थी कि जिस प्रकार हम पुराने खिलौने फेंक देते है और नए लेकर आते हैं उसी प्रकार भगवान ने मेरी मां अपने पास बुला कर नई मां मुझे दी है मेरी दूसरी मां भी मुझे वैसा ही प्यार देती जैसे मेरी सगी मां मुझे दिया करती थी मेरी दूसरी मां की एक बेटा और एक बेटी भी थी अब मैं स्कूल जाने लगी थी मेरी मां मुझे बेटा बेटा कहकर घर का सारा काम करवाती थी जब भी वह मुझे बेटा कहती मुझे बहुत अच्छा लगता । ऐसे ही वह मुझसे सारा काम करवाती मैं जैसे ही स्कूल से आती घर के काम में लग जाती जिस वजह से मैं पढ़ाई नहीं कर पाती थी और अपनी कक्षा में सबसे पीछे रहती कुछ समय बीता अब मैं बड़ी हो रही थी धीरे–धीरे मुझे दुनिया की समझ आ रही थी अब मैं सिर्फ अपनी पढ़ाई पर ध्यान देती स्कूल से आते ही मैं अपनी पढ़ाई करने लगती मेरी मां को मेरा पढ़ना पसंद नहीं था अब मैं अपनी कक्षा में सबसे पहले नंबर पर आती मेरी दूसरी मां मुझे जब भी काम करने को कहती मैं मना कर देती जिससे वह मुझे मारने लगती मेरे काम ना करने पर घर में रोज लड़ाई होती जो कि मुझे बिल्कुल पसंद

नहीं थी इसलिए मैं स्कूल से आते ही घर का सारा काम करती और देर रात तक पढ़ाई करती अब मैं 10 साल की हो गई थी और मेरी दूसरी मां ने मेरा स्कूल छुड़वाने की बहुत कोशिश की लेकिन कामयाब ना हो सकी धीरे–धीरे समय बीतता गया अब मुझे अपनी मां से बहुत डर लगने लगा मेरी दसवीं की पढ़ाई के बाद मेरा स्कूल जाना बंद कर दिया जैसा जीवन मेरी सगी मां ने मेरा सोचा था मेरा अब का जीवन बिल्कुल अलग था कहा उसने मुझे एक रानी बनाने के सपने देखे थे और किस्मत ने मुझे एक नौकरानी बना कर रख दिया दसवीं करने के बाद जैसे तैसे मैंने 12वीं की पढ़ाई खत्म की, अब मेरे कॉलेज जाने का समय आ गया लेकिन मुझे कॉलेज जाने की इजाजत नहीं थी मेरी सगी मां को मेरे नानाजी की जमीन का एक बड़ा टुकड़ा यह कहते हुए दिया था कि यह तेरी पढ़ाई में काम आएगा लेकिन मेरे जन्म के बाद मेरी मां ने वह मेरे नाम कर दिया जब मैंने अपनी दूसरी मां से कॉलेज जाने के बारे में पूछा तो उन्होंने मुझसे इस जमीन की मांग की लेकिन मेरे लिए मेरी पढ़ाई से बढ़कर कुछ ना था अनपढ रहती तो मेरे पास जमीन का एक टुकड़ा था लेकिन पढ़ाई करने के बाद मैं ऐसी 10 जमीनी ले सकती थी भले ही वह जमीन मेरी मां की दी हुई निशानी थी लेकिन मेरा पढ़ा लिखा इंसान बनना भी तो मेरी मां का सपना था यही सब सोचकर मैंने अपनी दूसरी मां को अपनी जमीन दे दी जमीन के साथ–साथ उन्होंने मुझको घर के सारे काम की भी मांग की लेकिन जब अपना सपना पूरा करने की आड़ हो तब कोई काम बड़ा नहीं लगता मैंने उनकी सारी शर्ते मान कर एक कॉलेज में दाखिला लिया मेरा कॉलेज मेरे घर से बहुत दूर था मैं सुबह घर का सारा काम करके कॉलेज जाती और कॉलेज से घर आने के बाद भी मुझे सारा काम करना पड़ता कॉलेज के घर आते आते मुझे शाम के 4:00 बज जाते जिस वक्त मेरी उम्र के बच्चे सो रहे होते थे उस समय मैं पढ रही होती थी रात को

देर तक पढ़ कर सोना और सुबह 3:00 बजे से उठकर घर का सारा काम करने के बाद कॉलेज की बस पकड़ना उस समय एक ही बात आगे आती थी कि कैसे भी करके सपना पूरा करना है मुझे अपना 1 वर्ष से लेकर 5 वर्ष तक का जीवन याद आता है जब मेरी सगी मां मेरे साथ थी वह कितना सुकून भरा जीवन था इसी के साथ मुझे अपने कॉलेज में भी बहुत सी मुसीबतों का सामना करना पड़ता था जैसे कि मेरी सगी मां का आत्म सम्मान उनके लिए बहुत मायने रखता था उनका पहनावा बहुत सादा था मैंने भी उनकी तरह अपने जीवन को कुछ इसी प्रकार ढालने की कोशिश की थी जिसकी वजह से मुझे कालेज में कुछ बच्चे पसंद नहीं करते थे वह मेरे पहनावे को देखकर मुझे आंटी बुलाया करते थे लेकिन मुझे इस बात का कोई फर्क नहीं पड़ता था बल्कि खुद पर गर्व होता था कि आज के जमाने में रहकर भी मैं अपनी मां के दिए हुए संस्कारों पर चल रही थी मेरा मजाक बनाने वाली लड़कियां खुद मॉडल पोशाक पहनकर खुद को अप्सरा समझती थी जिनमें से एक लड़की कोमल थी जो मेरी बेइज्जती करने में कोई कसर नहीं छोड़ती थी उसको मेरा सूट पहनना और दुपट्टा लेना बिल्कुल पसंद नहीं था जब भी वह मुझे यह सब पहनने को मना करती तो मैं उसे बताती कि यही हम लड़कियों की पहचान है और मैं उसे भी यह सब पहनने को बोलती उस समय उसे मेरी बात समझ में नहीं आई फिर एक दिन जब हम कालेज से घर जा रहे थे तभी रास्ते में हम देखते हैं कि कोमल को कुछ लड़के तंग करते हैं वह उसके पहनावे को देखकर उसपर गंदी नजर रखे हुए हैं मैं और मेरी कुछ सहेलियां मेरे साथ थी जब हमने वहां जाकर उनको धमकाया तो वह सब वहां से भाग गए तब कोमल को समझ आया कि उसे जो बात समझाई थी वह बिल्कुल सही थी सूट डालने से एक लड़की में अलग सी हिम्मत आ जाती है और अगर दुपट्टा सिर पर हो तो हिम्मत दुगनी हो जाती है एक लड़की का

पहना हुआ सूट और सिर पर दुपट्टा हो तो कोई उसे तंग करने की हिम्मत नहीं करता और अगर करता भी है तो उसकी पहनी हुई पोशाक उसे इतनी हिम्मत देती है कि वह उनका मुकाबला अकेली ही कर सकती है ।

क्या नजारे थे वो स्कूल टाइम के खुश मिजाज सा मन था
कोई गमी नही थी
खुशियो से भरा पड़ा था जीवन,
सुख की कोई कभी नही थी ।

मैडम के क्लास से जाते ही
हमारा वो शोर मचाना
मॉनिटर के खडे होते ही
हमारा चुप हो जाना

लंच ब्रेक की घंटी बजते ही
हमारे टिफीन का खुल जाना
अपना टिफिन बचा लेना
और दुसरों को चुरा कर खाना

आधी घंटी बजते ही हम खेलने को भाग जाते थे
कुछ बन जाते थे एक्टर
कुछ सुरों की राग गाते थे

फ्रि क्लास में

हमारे दुकान की चीजों के पैकेट खुल जाते थे ।
दोस्तों की मस्ती के प्यार में
हम पुरी दुनिया भुल जाते थे।
या अनमोल पल थे वो
पता नहीं लगा, कब मुट्ठी में खिसक गए थे
आज भी आखें भर जाती हैं उस पल को याद करके
जब हम एक दूसरे से बिछड़ गए थे ।

आज भी उस स्कूल में जाते ही
पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं
करते थे जहा मस्ती
देख उस कक्षा को उन पलों की बहुत याद आती है ।

पापा की परी

पापा की परी
आज उन्हें छोड़ बेगाने घर जा रही है
छोड़कर पुरानी यादें
वह एक नई जिंदगी पा रही है

रोती है और पूछती है अपने पापा से
दिल पर पत्थर रखकर क्यों यह फैसले ले रहे हो
मैंने तो कोई शिकायत नहीं की आपसे
फिर क्यों मुझे नई जिंदगी दे रहे हो

नहीं जाना बेगाने घर
मुझे अपने साथ रहने दो
रो रही है मां मेरी
उसे अपने मन की कहने दो

भाई अभी छोटा है मेरा
घर की जिम्मेदारियां नहीं संभाल पांएगा

मत करो उसे अपनी दीदी से अलग
बेचारा रो रो कर मर जाएगा

बहन भी अभी बच्ची है मेरी
इस दुनिया को नहीं समझती पूरा
इंसानों की परख नहीं उसको
कौन अच्छा है कौन बुरा

बहुत लगाव है इस परिवार से मेरा
मुझे अपनों से अलग मत करो
मेरी उदासी बर्दाश्त नहीं होती थी आपसे
अब मेरी आंखों में पानी मत भरो

उनके आने से मेरा
जीवन खिल गया है।
पागल सी हो गई हूँ
न जाने क्या मिल गया है

आने से उनके
जिंदगी में बाहर सी आ गई है
खुश रहता है मन
चारों और खुशियां छा गई है।

क्या बताऊं उनके बारे में
उनकी वह प्यारी सी बातें
उनसे बातें करते–करते दिन गुजर जाता है
और यादों में कट जाती है रातें

उनका हौसला मेरे लिए

दवाई का काम करता है
दुनिया की भीड़ में कोई उन्हें छीन न ले
बस इसी बात से मन डरता है ।

यूं तो बहुत सताती हूं उनको मैं,
मन की हर बात बताती हूं उनको मैं,
क्या करूं सताए बिना रहा नहीं जाता
प्यार इतना करती हूं उनसे शब्दों में कहा नहीं जाता

इस कदर देखते है जब वो मुझे
दिल करता है जीवन उन पर वार दूं
लोग मिसाले दे हमारे प्यार की
उनको इतना मैं प्यार दूं

उनकी वह मीठी सी,
आवाज क्या कमाल करती है
दुनिया से नफरत ही नहीं होती
मेरे अंदर प्यार ही इतना भरती है

उनका मुझे इस कदर प्यार से बुलाना
हाए मेरा शर्माना और शर्म से गाल लाल हो जाना
उसका मुझे प्यार से देख देखते ही
मेरी नजरों का झुक जाना

उनके दोस्तों का मुझे भाभी भाभी बुलाना
उनका मुझे देखना और मेरा शर्माना
उस वक्त फिक्र नहीं होती क्या कहेगा जमाना
मुझे तो होता है बस उनकी बातों में समाना

मैंने प्यार किया तो निभाउंगी
प्यार क्या होता है जग को दिखाऊंगी
मैंने सिखा है उनसे प्यार करना
अब सारी दुनिया को सिखाऊंगी ।

प्यार इस दुनिया में किसको नहीं हुआ हर इंसान को प्यार होता है माता–पिता को बच्चों से भवरे को फूलों से लेखक को किताबों से हर इंसान को किसी ना किसी से प्यार होता है लेकिन एक प्यार हमें उस इंसान से होता है जिसके साथ हमने जीवन बिताने की कसमें खाई होती हैं ऐसे ही प्यार की एक कहानी देखकर लेखिका अपने मन के भाव व्यक्त करती है और बताती है कि किस कदर एक प्रेमिका अपने प्रेमी के प्यार में खोकर उसकी तारीफ करती है और कहती है मेरे प्रेमी के मेरे जीवन में आने से मेरे जीवन में खुशियां ही खुशियां भर गई हैं मन भी खिल सा गया है और उसके प्रेम में मैं पागल सी हो गई हूं उसके आने से मेरी जिंदगी में बाहर से आ गई है मेरा मन खुश रहता है और मेरे चारों और खुशियां ही खुशियां छा गई हैं फिर कहती है कि क्या बताऊं मैं उनके बारे में मेरे पास शब्द ही नहीं है । उनका प्यार ब्यान करने को और उनकी वह मीठी मीठी सी बातें उनसे बात करते–करते ही मेरा दिन बीत

जाता है और उनकी यादों में मेरी रातें गुजर जाती हैं कहती है कि उनका हौसला मुझ पर दवाई जैसा काम करता है कही उन्हें इस दुनिया की भीड़ में खो ना दूं बस इसी बात से मुझे डर लगता है वैसे तो मैं उन्हें बहुत तंग करती हूं और उनको अपने मन की हर बात बताती हूं फिर कहती है कि क्या करूं उन्हें सताये बिना मुझसे रहा भी नहीं जाता क्योंकि मैं उनको इतना प्यार करती हूं जो शब्दों में बयान नहीं हो सकता जब वो मुझे प्यार से देखते हैं तो दिल करता है कि अपना सारा जीवन उन पर वार दूं और मैं उनको इतना प्यार दूं कि लोग हमारे मरने के बाद भी हमारी प्रेम कहानी को याद रखें कहती है कि उनकी वह मीठी सी आवाज क्या कमाल करती है मेरे अंदर किसी के लिए नफरत ही नहीं आती उनकी आवाज मेरे अंदर इतना प्यार भर देती है जब वह मुझे प्यार से बुलाते हैं तो उस वक्त मेरे गाल शर्म से लाल हो जाते हैं और जब वह मुझे प्यार से देखते हैं तभी मेरी नजर झुक जाती हैं जब उनके दोस्त मुझे भाभी भाभी बुलाते हैं और उस वक्त जीन नजरों से वो मुझे देखते हैं उस वक्त मुझे बहुत शर्म आ जाती है उस वक्त मुझे जमाने की बातों की फिक्र नहीं होती बस उनकी बातों में खो जाना चाहती हूं कहती हैं मैंने प्यार किया तो सच्चे दिल से निभाऊंगी सच्चा प्यार क्या होता है यह सारे जग को दिखाऊंगी उन्होंने मुझे सिर्फ प्यार ही प्यार सिखाया है अब मैं सबको सीखऊंगी।

दुनिया के रंग

इस दुनिया की समझ नहीं आती मुझे
इसलिए तो आज पूछने आई हूं तुझे
आंसू पोंछकर औरतें कैसे हंसती हैं
जिस घर में पंछी तक नहीं बैठते
उस घर में औरतें कैसे बस्ती हैं

आंसू पोछकर हंसना
हमें तो सिखा दो मां
कैसे रहा जाता है इस दुनिया में
हमें भी बता दो मां

इस दुनिया के ताने सुन सुनकर
मन अंदर से टूट गया है
देता नहीं साथ भगवान भी
क्या वह मुझसे रूठ गया है

मन की सारी बातें तुझे बता दी
अब तुझसे क्या छुपाऊं

क्या क्या नहीं सुना इस दुनिया से मैंने
मां तुझे क्या बताऊं

कैसे रहा जाता है इस दुनिया में
मुझे भी सिखा दो मां
किसके साथ कैसे पेश आना है
मुझे भी बता दो मां

ये दुनिया मुझे नहीं भाति
मुझे तो बस है तू ही लुभाती
तेरे गले लग कर ही रोना चाहती हूं
मैं तो बस तेरी दुनिया में खोना चाहती हूं

तु मुझसे कभी दूर ना होना
नहीं चाहती मैं तुझे खोना
मुझे तो बस तू ही भाती है
तेरे साथ ही दुनिया की हर चीज लुभाती है

तू मुझसे दूर हुई तो मैं कहां जाऊंगी
तेरे बिन ना चैन से कभी जी पाऊंगी
तुझसे दूर होकर मैं तो मर ही जाऊंगी
तू ना हो पास मेरे तो मैं अपने मन की बात किसे बताऊंगी

बस तुझ पर विश्वास है मेरा
तू मेरा विश्वास मत तोड़ना
खुद से मेरा हाथ छुड़ाकर
और किसी संग रिश्ता मत जोड़ना

क्या है यह दुनिया के रंग
मुझे नहीं पता इन के ढंग
मुझे तो बस तेरी दुनिया में ही जीना है
धोकर तेरे चरणों पर बस उन्हीं का अमृत पीना है

जब एक बेटी अपनी मां से दूर हो जाए और उसकी मां जब ऐसे देश में चली जाए जहां से वह ना तो उससे मिल सके और ना ही बात कर सकें और दूसरी और दुनिया वाले उसे ताने दे देकर सताए उस समय वह अपनी मां से बात करने को तरसती है जब बहुत बार बुलाने पर भी उसकी मां उसे नहीं मिलती तो वह अपनी मां की फोटो से बात करती हुई है और कहती है कि मां मुझे इस दुनिया के समझ नहीं आती इसलिए मैं आज कुछ से कुछ बातें पूछने आई हूं अपने आंसुओं की आंखों में समाकर और दुख को दिल में दबाकर औरतें कैसे हंस लेती हैं वह कहती हैं कि जिस घर में पंछी तक नहीं बैठना पसंद करते उस घर के लोगों के साथ औरतें अपना जीवन कैसे बिता लेती हैं फिर वह अपनी मां से कहती है कि आंखों के आंसू पोंछकर और दिल में दर्द लेकर मुझे भी हंसना सिखा दो मां इस दुनिया में कैसे रहा जाता है यह हमें भी सिखा दो मां इस दुनिया के ताने और कड़वी बातें सुन सुन कर मेरा अंदर का मन टूट गया है अब तो भगवान भी मेरा साथ नहीं देता तू ही बता क्या वो भी मुझसे रूठ गया है फिर कहती है कि मैंने अपने मन की सारी बातें तुझे बता दी अब मैं तुझसे कैसे कुछ छुपाऊं मैंने इस दुनिया के लोगों से क्या–क्या नहीं सुना क्या क्या नहीं झेला मैंने । अब तुझे कौन कौन सी बात बताऊं फिर वह अपनी मां से पूछती है कि इस दुनिया में कैसे रहा जाता है मुझे यह सिखा दो और किस इंसान के आगे कैसे पेश आना है मुझे यह सारी बात बता दो इस दुनिया में कुछ इतने पत्थर दिल इंसान हैं कि किसी के आंसू उन्हें दिखाई नहीं देते और कुछ इतने अच्छे दिलवाले हैं कि लोगों

की उदासी देखकर पहचान जाते हैं फिर वह कहती है कि मुझे इस दुनिया के लोग नहीं भाते मुझे तो बस तु ही अच्छी लगती है तू ही लुभाती है मैं किसी को अपना दुख नहीं बताना चाहती बस तेरे गले से लग कर रोना है इस दुनिया से कोई वास्ता नहीं रखना चाहती बस तेरी दुनिया में खोना चाहती हूं वह कहती है कि पहले ही तुम मुझे छोड़ कर मुझसे दूर चली गई हो अब तु मेरी यादों में दूर मत होना मैं तुझे खोना नहीं चाहती तु मुझसे दूर है लेकिन कहीं ना कहीं मुझे एहसास है कि तू मेरे साथ है मुझे तो इस सारी दुनिया में तू ही अच्छी लगती है तू साथ हो तो दुनिया की हर चीज अच्छी लगती है तेरे बिना दुनिया का हर रंग फिका है अगर तु मुझसे दूर हो गई तो मैं कहा जाऊंगी जिस दिन मुझे तेरे साथ होने की आस टूट गई उस दिन ना कुछ खाऊंगी ना पियूंगी तेरी यादों से दूर होकर मैं मर जाऊंगी इस बीच अगर तू मुझसे दूर हो गई तो मैं दिल की बात किसे बताऊंगी इस पूरे संसार में मेरा विश्वास बस तुझ पर ही है तू मेरा विश्वास मत तोड़ना अपना हाथ मुझसे छुड़वा कर इस दुनिया से मेरा रिश्ता जोड़ने की मत सोचना यह दुनिया के रंग क्या है ये दुनिया वैसे चल रही है मुझे इसके ढंग नहीं पता नहीं समझ में आती मुझे इस संसार की बातें मैं तो बस दुनिया में रहना चाहती हूं बस तेरे चरणों में लगकर और उन्हें ही धो धोकर पीना चाहती हूं मेरी तो भगवान से एक ही अरदास है चाहे वह इंसान के साथ कितना भी माड़ा क्यों ना कर ले उसकी राहों में कांटे बिछा दे उसके एक वक्त की रोटी कम मिल जाए बस एक मां को अपने बच्चे से दूर ना करें मां होगी तो बच्चे के लिए भगवान के बिछाए सारे कांटे चुग देगी और अपनी भूख मारकर अपने बच्चे का पेट भरेगी ।

मुझे पढ़ने दो

जब होती है एक बेटी की उम्र सोलहा
थम जाते हैं उसके पैर
रुक जाते हैं लिखने वाले हाथ
और गलत माना जाता है उसका घर से बाहर होना

चाहे कितनी भी हो कोशिश कर ले लोगों को राजी करने की
लेकिन लोग एक लड़की की सोच को कभी नहीं अपनाते
एक होनहार लड़की को अनपढ़ बना देते हैं
फिर उम्र भर उसे जमाने की ठोकरे है मरवाते

अगर एक लड़की को घर वालों ने अनपढ़ बनाया
तो उसमें उसका क्या दोष
सारी उम्र उसे घर में बंद रखेंगे
तो उये क्या रहेगी दुनिया की होश

एक लड़की को अनपढ़ कहकर उसे मत सताओ
अगर उसके घर वालों ने उसे अनपढ़ बना दिया
तो तुम उसको पढ़ाओ
दुनिया ने तो उसे पहले ही बहुत ठोकरे मारी है।

अब तुम तो मत ठुकराओ
अनपढ़ रहना लड़की की गलती नहीं
गलती तो उनकी है जिन्होंने उसके पैरों बंधन डाला है
फिर उम्र भर का यह ताना
आखिर हमने तुझे पाला है

जब उसकी उम्र पढ़ाई की निकल जाती है
तब वह अनपढ़ कहकर सताई जाती है
तब उसका साथ कोई क्यों नहीं देता
जब वह पढ़ने की चाहत जताती है

एक लड़की को यह कहकर अनपढ़ रखा जाता है
कि तुझे कौन सा नौकरी करनी है
पढ़कर भी तो तुझे बेगाने घर ही जाना है
कौन सा धन से हमारी पेटियां भरनी है

एक बेटी में इतनी हिम्मत तो होती है
कि वो कुछ करके दिखा सकती है
खुद भी कुछ सिखा सकती है
दूसरों को भी सिखा सकती है।

विनती है मेरी दुनिया वालों से
अगर एक बेटी अपने दम पर कुछ करना चाहती है
तो उसे करने दो
मत करो उसके लिए दुआएं
उसे खुद अपनी जिंदगी में खुशियां भरने दो ।

बेटी को इतना पढ़ाओ
कि वह सारी उम्र तुम्हारा तुम्हारे गुण गाए
उसे इतना मत दबाओ
कि एक बेटी बनकर वह उम्र भर पछताए

आज के दौर में लड़का लड़की को एक समान समझा जाता है लेकिन कुछ लोग आज भी ऐसे हैं कि अपनी बेटी को 16 साल के बाद पढ़ने नहीं देते यह सोच कर कि वह जवान हो गई है उसका घर से बाहर निकलना पसंद नहीं किया जाता कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी बेटी को पढ़ाना तो चाहते हैं लेकिन लोगों की बेकार बातें सुनकर वह डर जाते हैं इन्हीं सब बातों को देखकर लेखिका के मन में कुछ बातें उत्पन्न होती हैं जिन्हें एक कविता द्वारा लिखा गया है वह बताती है कि एक लड़की चाहे कितनी भी कोशिश क्यों ना कर ले इस दुनिया वालों को अपना बनाने की चाहे वह कितना भी प्रयास क्यों न कर लें उन्हें खुश करने के लिए लेकिन यह दुनिया कभी उसे अपना नहीं मानती कभी उसका साथ नहीं देती चाहे वह लड़की पढ़ाई में कितनी भी होशियार क्यों ना हो लेकिन उसके घर वाले

अपनी बेटी को जवान होता देख उसका स्कूल छुड़वा देते हैं और उसे अनपढ़ बनाकर उसके ससुराल में ठोकर खाने के लिए भेज देते हैं जबकि उन्हें करना यह चाहिए कि वह पहले अपनी बेटी को पढ़ा कर अपने पैरों पर खड़ा करके उसकी शादी करे चाहिए ताकि कल को ससुराल वाले उसे धक्के मारे तो वह तुम्हारे पास तुम्हारे टुकड़ों पर पलने ना आए वह अपने ससुराल वालों को कुछ बनकर दिखाएं और तुम्हारा नाम रोशन करें फिर वह कहती है अगर एक लड़की के घरवालों ने उसकी पढ़ाई छुड़वा कर उसे अनपढ़ बना दिया है तो उसमें उसकी क्या गलती है अगर हम सारी उम्र उसे घर में बंद रखेंगे तो उसे दुनिया की होश कैसे आएगी आजकल तो लड़की का पति ही उसे अनपढ़ कह देता है उसे यह नहीं कहना चाहिए अगर घर वालों ने उसका साथ नहीं दिया तो उसके पति का यह फर्ज है कि उसको पढ़ाए अगर उसके घरवालों ने उसका साथ नहीं दिया तो पति को भी नहीं ठुकराना चाहिए । अनपढ़ रहना एक लड़की की गलती नहीं होती गलती तो उनकी होती है जिन्होंने उसके रास्ते में रुकावट डाली हैं एक तरफ वो लोग उसे पढ़ाते नहीं और पढ़ाई छुटवाने के लिए उसे धमकाया जाता है कि हम तुझे पाल रहे हैं उतना ही बहुत है पढ़ाई करने की कोई जरूरत नहीं है जब एक लड़की की उम्र पढ़ाई करने की निकल जाती है और उसकी शादी हो जाती है तब लोग उसे अनपढ़ बोल बोल कर उसकी बेईज्जती करते हैं उन्हें कोई पूछे कि उस वक्त तुम कहां थे जब उसका स्कूल छूट गया था और वह चिल्ला चिल्ला कर कह रही थी कि मुझे पढ़ने दो वह अपनी शिक्षा की भीख मांग रही थी तब कहा थे तुम उस वक्त किसी ने उसका साथ नहीं दिया और आज उसकी बेईज्जती करने के लिए सब आगे आ रहे हैं जब एक लड़की पढ़ाई करने की मांग करती है तो उस वक्त कुछ लोग तो यहां तक कह देते हैं कि अगर हमने तुझे पढ़ा भी दिया तो तुझे कौन सा सदा के लिए

यहां रहना है पढ़ लिखकर तो ससुराल चली जाएगी तुझे कौन सा यहां नौकरी करनी है कौन सा हमारी पेंटियां धन से भरनी है तो हमारा तुझे पढ़ाने का क्या फायदा होगा लेकिन उन लोगों को यह नहीं पता कि एक बेटी इतनी हिम्मत होती है कि वह दोनों परिवारों की बखूबी सम्भाल सकती है वह मेहनत करके उन्हें कुछ बनकर दिखा सकती है उनमें इतनी हिम्मत होती है कि वह खुद भी बहुत कुछ सीख सकती और लोगों को भी सिखा सकती है इसलिए लेखिका हाथ जोड़कर पूरी दुनिया वालों से विनती करती है कि अगर एक बेटी अपने दम पर कुछ करना चाहती है तो उसे करने दो उसे मत रुको एक लड़की तुमसे कुछ नहीं मांगती अगर वह खुद अपनी जिंदगी में खुशियां भर सकती है तो उसे बढ़ने दो मत रोको अपनी बेटी को इतना पढ़ाओ कि अगर वह आगे चलकर कुछ कर दिखाएं तो वह उसका कारण तुम्हें माने उसे दबाओ मत कहीं वह आगे चलकर यह सोचकर ना पछतायें कि अगर वह आपकी धमकी से ना दबती और आगे बढ़ जाती आज उसे पछताना ना पड़ता अपनी बेटी की हिम्मत बनो **कमजोरी** मत बनो ।

बेटी की पुकार

मेरा भी दिल करता है
कि बांधु अपने भाई के सर पर सेहरा
नजर ना लगे मेरे भाई को
रखूं उस पर अपनी नजरों का पहरा

मेरा भी दिल करता है
भाई की शादी में गीत गाऊं
लेकिन यह संसार गाने नहीं देता
मार देता है जन्म से पहले
मुझे इस दुनिया में आने नहीं देता ।

मेरा भी दिल करता है मां
घर के काम में तेरा हाथ बटाऊं
तुझे खिलाऊंगा अपने हाथों से
और हाथ से खाना मैं खाऊं

गर्भ में मुझे एक डॉक्टर मार देता है
दो मिनट भी रोने नहीं देता
शायद इसलिए लड़कियां पहले ही हो जाती हैं
क्योंकि लड़कों के बाद कोई होने नहीं देता

मुझे दादा दादी के साथ रहना है
मत मरवा मुझे गर्भ में मां
मुझे बाहर आकर तुझे कुछ कहना है
आने दे मुझे इस दुनिया में
अपने भाई को मैं खुद पालूंगी
संभाल लूंगी सारी जिम्मेवारियां
तुझ पर अपना बोझ नहीं डालूंगी ।

भाई के हाथ पर राखी बांधनी है
सुनी नहीं रहने दूंगी उसकी कलाई
इस दुनिया में आने दो मुझे
मैं आपकी ही बेटी हूं पापा
नहीं हूं कोई पराई

दादा दादी के साथ भी मैं प्यार से रहूंगी
अगर उन्होंने मुझे गुस्से में कुछ बोल दिया
तो भी आगे से मैं कुछ ना कहूंगी

आने दो मुझे दुनिया में पापा
जैसे आप रखोगे रह लूंगी

आई कभी मुझ पर कोई मुसीबत
तो मैं हंस कर सह लूंगी

ख्याल रखूंगी आपकी इज्जत का
उस पर कभी दाग नहीं लगने दूंगी
और कभी आपकी इज्जत पर सवाल उठा
तो उससे पहले मैं मौत को अपना लूंगी ।

आपकी आन बान और शान
इसका सदा मैं रखूंगी ध्यान
आप भी मुझे निराश मत करना
हो सके तो मेरी जिंदगी में खुशियां ही भरना ।

बेटी को गर्भ में मारना उसे सताना यह सब आजकल आम बात है सब लोग इस बात को जानते हुए भी इसे नजरअंदाज कर रहे हैं बेटी को घर में एक कैदी की तरह बंद रखा जाता है उसका ज्यादा हंसना पसंद नहीं किया जाता वह सब का ख्याल रखती है शादी से पहले अपने पिता की इज्जत का ख्याल रखती है शादी के बाद पति की ईज्जत का ख्याल रखती है शादी से पहले मायके घर ार को संभालती है शादी के बाद ससुराल को संभालती है सबकी खुशियों का ध्यान रखती है लेकिन उसकी खुशी का क्या ? उसके सपनों का क्या ? ऐसे ही कुछ बातों को ध्यान में रखते हुए लेखिका ने अपने मन के भाव एक कविता के द्वारा व्यक्त किए हैं जिसमें वह अपनी मां से कहती है कि मां मेरा भी तो दिल करता है कि अपने भाई की शादी में उसके सर पर सेहरा बांधू मेरा भाई कितना प्यारा

है उसे इस जहान की नजर ना लग जाए इसलिए मैं हर वक्त उसका ध्यान रखूं मेरा बहुत मन करता है कि अपने भाई की शादी में गीत गाऊं लेकिन मैं क्या करूं यह संसार वाले मुझे गाने नहीं देते मेरा जन्म होने से पहले मुझे मरवा दिया जाता है मुझे इस संसार में आने नहीं देते मेरा बहुत दिल करता है कि जब तु घर का काम करें तो मैं तेरा हाथ बटाऊं मैं तेरे हाथों से खाना खाऊं और अपने हाथों से तुझे खिलाना चाहती हूं मेरे घर वालों के कहने पर मुझे एक डॉक्टर गर्भ में ही मार देता है वह मुझे दो घड़ी रोने भी नहीं देता एक लड़के से पहले लड़की का जन्म इसीलिए हो जाता है क्योंकि बाद में ये दुनिया वाले नहीं होने देते हैं मेरी प्यारी मां मुझे इस संसार में आने दें मुझे अपने दादा दादी के साथ रहना है मुझे गर्व मैं मत मरवा दुनिया में आने दें तु भाई की चिंता मत कर उसे मैं खुद अपनी गोद में खिलाऊंगी मैं उसे पालूंगी भी और घर की जिम्मेदारियां भी मैं खुद संभाल लूंगी तुझ पर मैं किसी चीज का बोझ नहीं आने दूंगी राखी पर अपने भाई की कलाई पर राखी बांधनी है उनकी कलाई सूनी नहीं रहने दूंगी फिर वह अपने पापा से कहती है कि पापा मैं आपकी बेटी हूं पराई नहीं हूं मुझे गर्भ में मत मरवाओ मुझे इस दुनिया में आने दो अपने दादा दादी के साथ भी मैं प्यार से रहूंगी अगर उन्हें कभी गुस्सा भी आ गया और उन्होंने गुस्से में मुझे कुछ बोल तो मैं कभी कुछ नहीं कहूंगी चुपचाप उनकी बात सुन लूंगी फिर वह अपने पापा से विनती करती है कि पापा मुझे इस दुनिया में आने दो जैसे आप मुझे रखोंगे बिना शिकायत किए रह लूंगी और अगर कभी मुझ पर मुसीबत आ गई तो मैं आपको परेशान नहीं करूंगी मैं खुद ही सह लूंगी फिर वह कहती है कि मैं आपकी ईज्जत का ख्याल रखूंगी मैं आपकी ईज्जत पर कभी भी दाग नहीं लगने दूंगी और अगर कभी आप पर भी कोई वजह से सवाल उठायेंगा तो उससे पहले ही मौत को अपना लूंगी मैं आपकी आन बान और शान का

हमेशा ख्याल रखूंगी वह अपने पिता से विनती करती है कि आप भी मुझे कभी उदास मत करना और मेरी जिंदगी में खुशियां भरने की कोशिश करना एक बेटी शादी से पहले अपने मायके घर को अपना समझती है लेकिन फिर भी लोग इस बात का एहसास दिलाते रहते हैं कि यह घर तेरा नहीं है एक दिन तुझे इस घर को छोड़कर जाना है और शादी के बाद वह ससुराल को अपना घर मानती है तो उस घर में उसे इस बात का एहसास दिलाया जाता है कि तू पराये घर से आई है वह सारी उम्र ससुराल में सबका ध्यान रखती है लेकिन उसकी एक गलती पर उसको धक्के मार कर निकाल दिया जाता है उसकी भावनाओं का कोई मोल नहीं होता उसके आंसुओं का कोई मोल नहीं होता।

भाई

एक भाई दूजे भाई के काम आता है
देखकर अपने भाई को दुखी
वह दौड़ा चला आता है
नहीं देख सकता उसको दुख में
एक भाई दूसरे भाई को रास्ता दिखाता है

एक मां के दो बेटे
एक बिगड़ जाए तो दूजा उसे समझाता है
भटक जाए अगर एक भाई
तो दूजा उसे रास्ता दिखाता है
पत्नी के आते छोटा भाई बदल जाए
तो दूसरा उसे समझा देता है
लाख गलतियां कर ले छोटा भाई
फिर भी बड़ा उसे अपना लेता है

भाई ही लड़ते हैं भाई ही गले लगाते हैं

आ जाए अगर एक पर दुख
तो दूजे भाई उसे बचाते हैं

बड़ा भाई पिता के समान होता है
माना छोटा थोड़ा सा नादान होता है
छोटा भाई कुछ बोले तो बड़ा सह लेता है
लाख बातें छुपाए बड़ा भाई
लेकिन छोटा भाई उसके मन की बात कह देता है ।

भाई–बहन की जोड़ी भी कम नहीं होती
भाई भरता है बहन की झोली में खुशियों के मोती
कर देता है उसकी हर मांग पूरी
भाई सब कुछ सह सकता है
बस नहीं सह पाता अपनी बहन से दूरी ।

इस दुनिया में सबसे खूबसूरत रिश्ता होता है भाई का दो भाई अपने माता–पिता की दो बाजू के समान होते हैं बचपन में वह एक साथ खेलते हैं एक साथ पढ़ते हैं और एक साथ बड़े होते हैं उन दोनों में कोई भेदभाव नहीं होता लेकिन जैसे ही वह बड़े होते हैं दोनों एक दूसरे के वैरी बन जाते हैं जैसे एक दूसरे से बड़ा दुश्मन दुनिया में कोई ना हो ऐसे ही भेदभाव को देखकर लेखिका ने एक कविता के द्वारा अपने मन के भाव व्यक्त किए हैं जिसमें वह बताती है कि एक भाई ही दूसरे भाई के काम आता है वही उसका सहारा बनता है वह अपने एक भाई को मुसीबत में देखकर दूसरा भाई दौड़ा चला आता है एक भाई का दूसरे भाई को दुख में नहीं देखा जा सकता है इसलिए वह उसे सही रास्ता दिखाता है और उसी रास्ते पर चलने की सलाह देता है एक मां के दो बेटे होते हैं अगर एक भाई बिगड़ जाए तो दूसरा भाई उसे समझाता है एक भाई रास्ता

भटक जाए दूसरा भाई उसे रास्ता दिखाता है फिर वह कहती है कि जब दोनों की शादी हो जाए तो यदि छोटा भाई शादी के बाद बदल जाए तो बड़ा भाई उसे समझा देता है छोटा भाई चाहे लाख गलतियां कर ले फिर भी बड़ा भाई उसकी सारी गलतियों को अनदेखा करके उसे अपना लेता है भाई ही लड़ते हैं और भाई ही गले से लगाते हैं अगर एक भाई पर दुख आ जाये तो दूसरा भाई उसे बचाता है भाइयों का रिश्ता बहुत खूबसूरत होता है लेकिन भाई बहन का रिश्ता भी कम नहीं होता है वह राखी पर अपनी बहन के साथ किए गए वादे को अच्छे से निभाता है वह उसकी झोली में खुशियां ही खुशियां भर देता है उसकी हर मांग को पूरा करता है वह सब कुछ सह सकता है लेकिन अपनी बहन से दूरी नहीं सह सकता बड़ा भाई पिता के समान होता है चाहे छोटा भाई थोड़ा सा नादान हो लेकिन बड़ा भाई अपनी जिम्मेवारियों से पीछे नहीं हटता अगर उस पर कोई दुख आ जाए तो बिना किसी को बताए सह लेता है फिर भी चाहे बड़ा भाई लाख बातें छुपा ले लेकिन छोटा भाई उसके चेहरे से ही पहचान लेता है कि वह मुसीबत में है लेकिन आज भी कई घर ऐसे हैं जिनमें भाई भाइयों में झगड़ा होता है वह एक दूसरे को मारने पर उतर आते हैं उनके लड़ाई का कारण भी केवल जमीन जायदाद होती है लेकिन शायद उन्हें यह नहीं पता कि जिस जमीन के पीछे वह लड़ रहे हैं वो कल किसी और की थी आज तुम्हारी है कल को किसी और की हो जाएगी यह ना तो आज तक किसी की हुई है और ना ही होगी यह मनुष्य को इसी जन्म में मिली है और इसी जन्म में उससे छीन ली जाएगी मनुष्य अपनी सारी उम्र पैसा कमाने में अपना जीवन व्यर्थ गंवां बैठता है उसे दुनिया की कोई होश नहीं होती उसे अपने रिश्तो की कोई होश नहीं होती उसके जीने का केवल एक ही मकसद होता है केवल पैसा कमाना लेकिन उसे यह नहीं पता होता कि मैं किस लिए कमा रहा हूं एक दिन

उसे सब कुछ छोड़ कर उसके असली घर जाना ही होगा वह सारी उम्र पैसा कमाने के उपाय सोचता रहता है उसे रिश्तो का कोई मूल्य नहीं पता होता लेकिन जब उसे होश आती है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है उसकी जवानी चली जाती है और तब तब वह पछताता है लेकिन उस समय उसके पास पछताने के बजाय और कोई रास्ता नहीं होता ।

आज मैं भी उन लोगों का दर्द समझ पा रही हूं
माफ करना दुनिया वालों
कुछ कड़वे बोल बोलने जा रही हूं

बोल कड़वे है पर बिल्कुल सच्चे है
दुखी हैं वह सब लोग फिर चाहे बड़े हैं या बच्चे हैं

बता रही हूं किन्नरों का दर्द
जो ना औरत है ना ही मर्द
सब के दुख बंट जाते हैं
फिर क्यों नहीं बंट सकते उनके दर्द

पैदा होते ही वह सड़कों पर फेंक दिए जाते हैं
उस दिन के बाद से
वह अपने जीवन में दुख ही दुख पाते हैं

बच्चे के पैदा होते ही पिता लगा पूछने

बेटा है या बेटी
होती है दुखी मां
बताती है पति को
ना पुरुष है ना माता
यह तो दोनों का आधा

किन्नर अपना जीवन फुटपाथ पर बिताते हैं
होते हैं सब की खुशियों में शामिल
लेकिन लोग उन्हें कड़वे बोल बोलकर सताते हैं

होता है जन्म जब किन्नर का
दिया जाता है छोड़ उन्हें किन्नर की बस्ती में
और जाता है समझाया
तुम्हें यही है रहना और यही है खाना
मरने के बाद भी जाता है मारा उसे चप्पलों से
कह दिया जाता है दोबारा इस पेशे में मत आना

बिताते हैं जीवन फुटपाथ पर
वही है सोते है
नहीं देता हौसला कोई
वो एंकाक ही रोते है ।

होते हैं वह सब की खुशी में शामिल
नहीं होता पता किसी को उनका दर्द का
उलझ जाते हैं वो नहीं पाते समझ

हम औरत का सिंगार करें या मर्द का

जुस लोग खुशी से पीते हैं
जहर नही पिया जाता
बेटा बेटी को सम्मान दिया जाता है
फिर इन किन्नरों को क्यों नहीं दिया जाता ।

मारता है जब ताली
तो उसका मजाक उड़ाया जाता है
देता है वो तुझे खुशी
तुझसे वह दुख पाता है

हम लोग किन्नर किन्नर को शराफ मानते हैं लेकिन वह भी हमारी तरह इंसान ही होते हैं एक और हम उनको सराप समझते हैं और दूसरी और उनका आशीर्वाद लेते हैं उनके पैदा होने से पहले घर में खुशियों का माहौल होता है लड्डू बांटे जाते हैं लेकिन जब पता लगता है कि किन्नर हुआ है तो पूरे घर में मातम छा जाता है ऐसा क्यों ? क्या वह इंसान नहीं है क्या वह भगवान के भेजे नहीं हैं ? पैदा होते ही उन्हें किन्नरों की बस्ती में छोड़ दिया जाता है उन्हें उनकी मां की गोद में दो मिनट रोने तक का मौका नहीं मिलता जब वह रोते हैं तो उन्हें चुप करवाने वाला कोई नहीं होता जब हमारे घर में एक बेटा या बेटी होती है तो हम उसका अच्छे से ध्यान रखते हैं बच्चे की मां को बोल दिया जाता है कि इसे बाहर मत निकालना ठंड लग जाएगी इसे भूखा मत रखना इसे रोने मत देना लेकिन जब एक किन्नर होता है और उसे बचपन में ही परिवार से अलग कर दिया जाता है क्या तब हमें अपने बच्चे की सेहत का ख्याल नहीं आता ?

वह भी तो हमारा ही बच्चा होता है उसे बचपन से ही मां से अलग कर दिया जाता है मां का प्यार नहीं मिलता बाप का प्यार नहीं मिलता हम लोग उनको अपनी खुशियों में बुलाएं वो भागे चले आते हैं हमारी खुशी में शामिल होते हैं और हम उन लोग उनको नाचता देख तालियां बजाते देख उनका मजाक बनाते हैं उन पर हंसते हैं क्यों ? क्या उनकी कोई इज्जत नहीं होती ? उनकी कोई भावनाएं नहीं होती ? उनका दिल नहीं दुखता ? अगर वो हमें खुश करते हैं हमारी खुशी में शामिल होते हैं तो हमारा भी कर्तव्य बनता है कि हम भी उनकी खुशियों का ख्याल रखें अगर वह इज्जत देते हैं तो थोड़ी इज्जत हमें भी उनको देनी चाहिए अपने से अच्छे तो बेगाने होते हैं हम जैसे लोग उन्हें पैदा होते ही उस बस्ती में छोड़ आते हैं उस दुनिया में छोड़ आते हैं जहां ना वो किसी को जानतें है और ना ही कोई उन्हें वहां जानता है हम यह नही समझते हैं कि वह अपने परिवार से दूर अपनी मां से दूर कैसे रह सकते हैं एक किन्नर की मृत्यु के पश्चात उसे चप्पलों से पीटा जाता है और बोला जाता है कि इस पेशे में मत आना किन्नर की इस दुनिया से जाने के बाद दूसरे किन्नर खुशी मनाते हैं एक किन्नर को सड़क पर नाचते देख लोग उससे पूछते हैं कि तु ऐसे सड़क पर मांग मांग कर नाच नाच कर खाता है तुझे शर्म नहीं आती तो वो किन्नर जवाब देता है इसी रोड पर बड़े–बड़े नेता वादे करके मुकर जाते हैं इसी सड़क पर एक बेटी अपने पिता की इज्जत उछाल देती है शादी में इसी रोड पर ढोल से नाचते हुए बाराती जाते है जब सब काम इस सड़क पर हो सकते हैं तो हम इस सड़क पर मांग भी नही सकते है जब हम एक बेटे को सम्मान दे सकते हैं एक बेटी को सम्मान दे सकते हैं तो एक किन्नर को क्यों नहीं दे सकते क्यों हम उनको शराप समझते हैं हम इंसान का उदास चेहरा या उसके आंसू देख कर समझ जाते हैं की यह दुखी है लेकिन एक किन्नर कितना भी दुखी क्यों ना हो

वह कभी एहसास नहीं होने देता कि वह दुखी है उसे पता है कि उसे लोगों को खुश करना है उसे नाच कर मांग कर ही खाना है जब वह अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटता तो हम लोग क्यों हटते हैं उनके आंसू हम क्यों नहीं देख पाते उनका दुख नहीं समझ सकते और शायद ना ही कभी समझ पाएंगे ।

रब से प्यार

ईश्वर है या नहीं
नहीं जानती मैं
लेकिन उसके होने का मुझे एहसास है
आए जब भी मुझ पर दुख
तो लगता है ऐसा कि वह मेरे पास है

वो ही माता है वो ही पिता है
नहीं है इस दुनिया में कोई किसी का सहारा
हर इंसान उसी की उम्मीद में जिता है

हर पत्ते में हर पत्थर में
वह कण–कण में होता है
रोता है जब उसका कोई भगत
तो वह भगवान भी रोता है

नहीं भरोसा मुझे किसी पर
मुझे तो बस उसी पर आस है

लाख अपने हो मेरे
पर वो मेरे लिए सबसे सबसे खास है

लाख चाहते हो मेरे मुझको बस वही प्यारा है
कोई नहीं मेरा अपना
मेरा बस वो ही सहारा है
करेगा तू कब तक अनदेखा मुझे
मैं रोज तेरे दर पर आऊंगी
कोई लाख बुराई करें मेरी मैं तो बस तेरे ही गुण

तुझसे इश्क हो गया है
अब कुछ कहा नहीं जाता
सब दुख हंस कर सह लूं
बस तेरा बिछोड़ा सहा नहीं जाता

तरस गई हूं तेरे दर्शन को
तू कब आएगा
छुड़ायेगा मुझे इस दुनिया के जाल से
कब अपने संग ले जाएगा

मेरी भी फरियाद सुन ले सुना है
तूने मीरा को भी दर्श दिखाया था
पिलाया जब उसे अपनों ने जहर
तो तूने उसे बचाया था

दर्शन को तेरे
तेरी दीवानी तरस रही है
रो रहा है दिल मेरा
अखियां भी बरस रही है

इस दुनिया में हर इंसान किसी ना किसी मकसद से जी रहा है सबका जीने का अलग अलग ढंग होता है हर इंसान को भगवान से कोई ना कोई कामना होती है वह हर रोज ईश्वर से किसी ना किसी चीज की मांग करता है कोई परिवार की सुख शांति की मांग करता है कोई धन और कोई दौलत की मांग करता है लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो भगवान से भगवान को ही मांगते हैं और उसे किसी न किसी चीज की फिक्र नहीं होती उसे तो सिर्फ अपने प्रभु के दर्शन की चाह होती है लेखिका ने कभी ईश्वर को नहीं देखा होता लेकिन वह फिर भी कहती है कि ईश्वर है या नहीं मैं नहीं जानती मैंने उन्हें कभी नहीं देखा लेकिन मुझे कहीं ना कहीं उनके होने का एहसास है जब भी मुझ पर कोई दुख दर्द आए तो मुझे ऐसा एहसास होता है कि वह कहीं ना कहीं मेरे पास है वो मेरा सब कुछ है मेरी माता भी वही है मेरे पिता भी वही है इस दुनिया में कोई किसी का सहारा नहीं है केवल एक भगवान ही है जिसके सहारे इंसान जीता है वह हर जगह है वह हर पत्ते में है और कण–कण में हैं और उन्हें सबकी चिंता है लेकिन जब उनका कोई प्यारा भगत रोता है तो वो रब भी रोता है फिर लेखिका कहती है कि मुझे किसी पर भरोसा नहीं है मुझे सिर्फ अपने सतगुरु पर आस है उसी पर भरोसा है चाहे मेरे लाख अपने हो लाख मेरी चिंता करने वाले हो लेकिन मेरे लिए सबसे खास वोही है चाहे लाखों लोग हो मुझे पसंद करते हैं लेकिन मुझे तो सबसे

प्यारा वही है मुझे कोई अपना नहीं लगता मेरा तो सिर्फ और सिर्फ वही एक आसरा है फिर लेखिका ईश्वर से कहती है कि कब तक तू मुझे नजरअंदाज करेगा मैं रोज तेरे दर पर आऊंगी एक ना एक दिन तुझे मेरी सुननी ही होगी लोग चाहे मुझे कितना भी बुरा क्यों ना बोले कोई मुझे तुझसे दूर करने की कितनी भी कोशिश क्यों ना कर ले मैं सिर्फ और सिर्फ तेरे ही गुण गाऊंगी तेरी ही पूजा करूंगी तुझसे ही इश्क हो गया है मुझे अब इससे ज्यादा मैं तुझे क्या कह सकती हूं मैं सब कुछ हसं कर सह सकती हूं बस तुझसे दूर होकर मेरा गुजारा नहीं होता मैं तेरी एक झलक पाने को तेरे दर्शन को तरस गई हूं अब तो बता दे तू कब आएगा कब इस दुनिया के मायावी जाल से छुटकारा करवाएगा और कब मुझे अपने साथ ले जाएगा मैं तेरे आगे प्रार्थना करती हूं मेरी भी अरदास सुन ले मैंने सुना है जब मीरा के घर वालों ने उसे जहर का प्याला पिलाया था तो तेरी ही कृपा से वह बच गई थी तू चाहे तो क्या नहीं कर सकता तेरी मर्जी के बिना पत्ता तक नहीं हिलता तु मुझ पर भी मेहर कर मैं तेरे दर्शन को तरस रही हूं मेरा दिल तेरे बिना बहुत तड़पता है और मेरी आंखें भी तेरे दर्शन के लिए रो रही हैं ।

हमारा दुख

गरीब है हम लोग
नहीं मिलती दो वक्त की रोटी
मांगने पर भी ठुकराया जाता है हमें
सुनाई जाती हैं खरी–खोटी

कड़कती धूप में
ना पैर में होती है चप्पल
ना सिर पर छांव
पैदल चलते हैं हम
जल जाते हैं हमारे पॉव

ना कोई महल ना ही कोई घर
हम सड़क पर सोते हैं
भूखे मरते हैं हम भी

हमारे बच्चे भी रोते हैं

हम भी भगवान के बंदे हैं
करते हैं हम भी भक्ति
जब साधु संतों को इज्जत होती है
फिर हमारी क्यों नहीं हो सकती

सर्दी में भी भीख मांगते हैं हम
होती नहीं ठंड की फिक्र
हर बात पर चर्चा करते हैं लोग
फिर क्यों नहीं करते हमारा जिक्र

हमारी भी कोई इज्जत है
हम भी हैं इंसान
ठुकराया जाएगा हमें कब तक
कब मिलेंगे इंसाफ

दिल दुखता है हमारा
हमारे बच्चे जब भीख मांगते हैं
उनकी उम्र के सो रहे होते हैं
गरीब बच्चे भूख से जागते हैं

गरीबी एक ऐसी चीज है जो किसी पर भी आ सकती है लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके ऊपर इतनी गरीबी होती है कि वह भीख मांगने पर मजबूर हो जाते हैं ऐसे ही कुछ लोगों का दुख देखकर लेखिका ने

अपने मन के भाव एक कविता के रूप में व्यक्त करने का प्रयास किया है लेखिका का कहना है कि गरीबी में जन्म लेना पाप नहीं है लेकिन गरीबी में मर जाना पाप है फिर वह कविता एक के रूप में बताती है कि हम लोग बहुत गरीब हैं हमें दो वक्त की रोटी नहीं मिलती अगर हम लोगों के घरों में मांगने जाते हैं तो वे लोग भी हमें खरी–खोटी सुनाते हैं हमें धक्के मारकर घर से बाहर निकाला जाता है कड़कती धूप में हमारे पैरों में चप्पल नहीं होती हमें सड़क पर बिना चप्पल के चलना पड़ता है हमारे पावं जल जाते हैं लेकिन फिर भी हमें अपना और अपने बच्चों का पेट भरने के लिए भीख मांगनी पड़ती है हमारा कोई महल नहीं होता और ना ही हमारा कोई अपना घर होता है चाहे सर्दी हो या गर्मी हो हमें और हमारे बच्चों को सड़क पर ही सोना पड़ता है हम भी तो उसी भगवान के भेजे गए इंसान हैं हम भी उसकी भक्ति करते हैं अगर साधु संत किसी के घर में मांगने जाए लोग उन्हें इज्जत देते हैं उनके चरण छुते हैं उनका आदर करते हैं सम्मान करते हैं फिर हमारा सम्मान क्यों नहीं हो सकता क्यों हमें ठुकराया जाता है क्यों हमें कड़वी बातें सुनाई जाती हैं हम सर्दियों में भी सड़क पर चलते हैं भीख मांगते हैं हमें ठंड की कोई फिक्र नहीं होती उस वक्त एक ही ख्याल मन में आता है कि हमें तो बस अपने परिवार का और अपने बच्चों का पेट भरना है लोग हर बात पर चर्चा करते हैं हर चीज की उनको फिक्र है लेकिन ना हमारी किसी को फिक्र है ना हमारी गरीबी पर कोई चर्चा करता है और लोग हमें अपने पैरों की धूल समझते हैं हमें जलील किया जाता है हमें ठुकराया जाता है हमें भीख नहीं दी जाती बल्कि हमें गरीब कहकर सताया जाता है क्या हमारी इज्जत नहीं हम भी तो उसी मिट्टी के इंसान हैं जिस मिट्टी के आम लोग, आखिर कब तक हमें बेइज्जत करके ठुकराए जाएगा आखिर कब हमें इंसाफ मिलेगा कब हमारा अपना घर होगा कब इस गरीबी से छुटकारा

मिलेगा हमारा भी मन करता है कि हम एक आम इंसान की तरह जीवन बिताएं हम भी चाहते हैं कि हमारे बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़े अच्छी शिक्षा पा सके लेकिन हमारा दिल बहुत दुखता है जब हमारे नन्हे नन्हे बच्चे अपने छोटे–छोटे हाथ पसारे लोगों से भीख मांगते हैं उनकी उम्र के बच्चे रात में आराम से सो रहे होते हैं और हमारे बच्चे भूख के मारे सारी रात जागते हैं एक–एक पैसे को एक–एक रोटी को वो तरस रहे होते हैं हमारे छोटे छोटे बच्चों को भी कड़वी बातें सुननी पड़ती हैं लोग उन्हें बेइज्जत करके निकाल देते हैं उनकी भोले से मासूम से चेहरे पर किसी को दया नहीं आती घंटो घंटो उन्हें लोगों के दरवाजे पर बैठना पड़ता है ।

याद आता है वो रंगीला पंजाब
क्या थे उस पंजाब के रंग
अब तो जमाना बदल गया है
बदल गया है लोगों के रहने का ढंग

हमारे उठते ही
मां का स्कूल के लिए शोर मचाना
सरसों का साग, रोटी और मक्खन
अपने हाथों से खिलाना

पापा का खेत में जाना
मां का दोपहर में रोटी लाना
सारे दिन काम के बाद
रात में सबका इकट्ठा हो जाना

दादी भी रात भर कहानी सुनाती थी
क्या भला है क्या बुरा है हमें सिखाती थी

थपथपाई से हमें सुलाती थी
सुबह होते ही प्यार से हमें उठाती थी

सूट पहनती थी लड़कियां
अब तो जीन्स का जमाना है
बदल गई है दुनिया
पता नहीं अगले दौर में और क्या दिखाना है

हर इंसान को अपना जन्मस्थान प्यारा होता है लेकिन इन्हीं तमाम स्थानों में से एक स्थान पंजाब ज्यादातर पंजाबी लोग ही रहते हैं वह पंजाब की धरती को ही अपनी मां समझते हैं लेकिन अब जमाना बदल गया है और पंजाब के लोगों में भी बदलाव आ गया है अब लोग पहले जैसे नहीं रहे इस तरह के कुछ बदलावों को देखकर लेखिका अपने भावों को व्यक्त करती है और कहती है कि मुझे वह रंगीला पंजाब याद आता है उसके वो रंग याद आते हैं लेकिन अब पंजाब के लोग भी बदल गए हैं उनका रहने का ढंग बदल गया है वह बताती है कि जब हम सुबह उठते थे तो हमारी मां स्कूल जाने के लिए हमें तैयार करती थी वह सरसों का साग मक्की की रोटी और मक्खन अपने हाथों से हमें खिलाती थी पापा खेत जाते थे वह दिन भर काम करते थे और हक हलाल की कमाई करते थे और मां भी दोपहर में पापा के लिए खेत में रोटी लेकर जाती थी सारा दिन काम खत्म करने के बाद भी सभी परिवार वाले रात में ईक्कट्ठे होकर बातें करते थे मस्ती करते थे और दादी सारी सारी रात पुरानी बातें बताती थी लेकिन अब तो लोग मोबाइल में ही व्यस्त हैं उन्हें दादा–दादी और उनकी पुरानी बातों से कोई लगाव नहीं है आजकल के बच्चे सही गलत नहीं समझना चाहते पहले लड़कियां सूट पहनती थी और सर पर चुन्नी लिए बिना घर

से बाहर नहीं निकलती थी लेकिन अब तो जमाना बहुत बदल गया है लड़कियां सूट छोड़कर जीन्स पर उतर आई हैं पहले बुजुर्ग लोग अपने बच्चों को समझाते थे कि क्या सही है क्या गलत है लेकिन अब बच्चे बड़ों को ही सिखाते हैं पहले मेहमानों के घर आने पर लोग अपना कामकाज छोड़कर उनकी सेवा में लग जाते थे लेकिन अब तो किसी के पास मेहमानों के लिए दो घड़ी बैठने का वक्त नहीं है पहले लोग घर के पकवान खाया करते थे लस्सी पिया करते थे लेकिन अब उनकी जगह फास्टफूड ने ले ली है पहले बहुऐं अपनी सास को मां समान समझती थी लेकिन अब तो पानी तक नहीं पूछते भाइयों में प्यार था लेकिन अब तो भाई ही भाई का दुश्मन है ।

बुढ़ापा

एक बुजुर्ग की सुनो कहानी
याद आती है उसे अपनी जवानी
सोचता है जवानी का क्या वक्त था
खाता था पिता था करता था मौज
कोई गम ना था जीवन में खुश रहता था रोज

एक–एक पैसा जोड़ा अपने बच्चों को पाला
खून पसीने की कमाई से अपने बेटे के लिए घर भी बना डाला
अब मुझ पर बुढ़ापा आ गया
हड्डियां हो गई कमजोर
घर में बहू बेटा हुकुम चलाते हैं नहीं चलता मेरा जोर

कल तक जो घर मेरा था आज बेटा उस पर अकड़ जताता है
कल तक जो बेटा मेरा था आज मुझे दुनिया सिखाता है
बिस्तर कमरे के बाहर निकल गया
चलने में साथ नहीं देते पावं
पड़ा रहता हूं एक ही जगह
फिर चाहे धूप हो या छांव

पिता घर का उजाला है
माता है ज्योति
दुखी हैं वो भी संतान से
छुप छुप कर रोती है

बुढ़ापा और गरीबी ऐसी चीज है जो किसी पर आ जाए तो उसे सही और गलत इंसान की परख करवाता है जिस बेटे को उसके पिता ने अपना खून पसीना एक करके पाला हो और वही बेटा बुढ़ापे में उसका साथ नहीं देता उसके मन का दर्द क्या होता है कैसे वह अपने पुराने दिन याद करता है ऐसे कुछ भाव कविता के रूप में व्यक्त करने की कोशिश की है जिसमें एक बुजुर्ग अपनी जवानी याद करता है और कहता है कि वो जवानी के भी क्या दिन थे खाता था पीता था और मौज करता था मुझे किसी चीज कोई फिक्र नहीं थी मेरा जीवन खुशियां से भरा हुआ था मैंने अपने बच्चों के लिए एक–एक पैसा जोड़ा था और अपने खून पसीने की कमाई से बेटे के लिए घर भी बना दिया था उन्हें पढ़ाया लिखाया उनकी हर मांग को पूरी की लेकिन मुझ पर बुढ़ापा मेरी हड्डियां कमजोर हो गई मेरे अपने ही घर में बहू बेटा अपना हुकुम चलाते हैं मेरा बस नहीं चलता मुझे किसी भी काम में पूछा नहीं जाता मैं पुराने सामान की तरह एक कोने में पड़ा रहता हूं मेरे ही घर में मेरी ईज्जत घटती जा रही है कल तक जो घर मेरा था आज मेरा ही बेटा अपना बताकर अकड़ दिखाता है कल तक जिस बेटे ने मेरे कंधों पर बैठकर दुनिया की सैर की है आज वही बेटा मुझे सही गलत का रास्ता दिखाता है मेरा बिस्तर कमरे के बाहर निकल गया है और अब तो मेरे शरीर ने भी मेरा साथ छोड़ दिया है पैर भी चलने में मेरा साथ नहीं देते मैं घर के एक कोने में पड़ा रहता हूं फिर

चाहे धूप हो या छांव बहुत से लोग होते हैं जो बुढ़ापे में अपने माता–पिता की सेवा करते हैं लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो बुढ़ापा होते ही अपने माता–पिता को धक्के खाने के लिए छोड़ देते हैं पिता हमारे घर का उजाला होते हैं उन्हीं से घर रोशन होता है पर वह अपना दुख किसी को नहीं बताते वो अपनी परेशानी अपने चेहरे पर झलकने नही देते अपनी संतान से मां के दुखी होती है लेकिन औरत का दिल कमजोर होता है वह औलाद से दुख नहीं झेल सकती इसलिए वह छुप छुपकर रोती है एक मां के रूलाने से बड़ा बाप इस दुनिया में और पाप नहीं है उनके चरणों से बड़ा स्वर्ग और कोई स्वर्ग नहीं है ।

बेटी की कहानी

सर्दियों का समय था मैं और मेरी सहेली सैर पर जा रहे थे रास्ते में हमें कुछ घंटियों और आरती की आवाज सुनाई दी, जब थोड़ा और आगे गए तो देखा कि आगे मंदिर था हम मंदिर में गए तो देखा वहां बहुत सी लड़कियों ने बुजुर्ग औरतें ने अपने बाल खोले हुए थे और चिल्ला रही थी और मैं और मेरी सहेली सोच में पड़ गए कि यह सब क्या हो रहा है हम वहां कुछ देर रुके तो पता चला कि उन सब में भूत है तो मैंने उनको बोला यह सब ढोंग है ऐसा कुछ नहीं होता फिर मैंने देखा वह बुजुर्ग भी झूल रहे हैं तो मैंने सोचा यह सब ढोंग है तो नहीं कर सकते कुछ तो है फिर मैंने एक लड़की से इसके बारे में पूछा वह कुछ देर पहले झूल रही थी मैंने उसको पूछा आपको क्या हुआ था तो बताती हैं कि मेरे परिवार में मेरे मम्मी पापा ने मेरे ऊपर कुछ करवाया है जब मैंने उससे उसकी पूरी कहानी सुनी तो मेरे होश उड़ गए वह बताती है कि मेरी माता का नाम परमजीत कौर था वह सिख धर्म से थी मेरी माता के पिता जी बैंक में नौकरी करते थे और माताजी आर्मी में थी वह तीन बहने और दो भाई थे मेरी माता जी बचपन से डॉक्टर बनना चाहती थी 12वीं पास करने के बाद उन्होंने एक मेडिकल कॉलेज में एडमिशन लिया उनकी पढ़ाई पूरी होने वाली थी कि उनके पिताजी की मृत्यु हो गई और उनकी शादी कर दी गई उनके ससुराल वालों ने यानी मेरे पिताजी के परिवार वाले अच्छे

लोग नहीं थे और वह मेरी मम्मी की पढ़ाई करना पसंद नहीं करते थे मेरे मम्मी ने पढ़ाई छोड़ दी शादी के 1 साल बाद जब मैं हुई तो मेरे दादा दादी ने मेरी मम्मी को घर से बाहर निकाल दिया और उन्होंने आत्महत्या कर ली मम्मी के जाने के कुछ समय बाद पापा ने दूसरी शादी कर ली जब मैं जब मैं 10 साल की हुई तो मेरी सौतेली मां को पता लगा कि मेरी मम्मी की जमीन और उसका जितना भी पैसा है वह 18 साल के बाद मेरा हो जाएगा तो उन्होंने और पापा ने मिलकर मुझ पर हमले करने शुरू कर दिए उन्होंने मुझ पर बहुत से हमले किए मुझे नशे की गोलियां देनी शुरू कर दी और धीरे–धीरे मुझे उसकी लत लग गई और मैं पागलों जैसे व्यवहार करने लगी जब मैं 18 साल की होने वाली थी तो मैं पूरी तरह से पागल कर दी गई मुझे थोड़ी थोड़ी देर बाद दौरा पड़ने लगा मैं चिल्लाती, गलियों में घूमती लोगों को मारती इसी बीच मुझे एक नई दोस्त मिली जिसने मेरी मदद की और जब मेरी हालत में सुधार आने लगा तो मुझे पता लगा कि मेरी मम्मी ने आत्महत्या नहीं की थी बल्कि उनको भी यही गोलियां दी गई थी और उनके दिमाग में स्टरैस की वजह से उन्होंने आत्महत्या की फिर मैंने अच्छे डॉक्टर से अपना इलाज कराया कुछ दिन मैं ठीक रही थी उसके बाद मेरे सिर में दर्द रहने लगा शरीर भी भारी रहने लगा मैंने टेस्ट करवाया तो सब नॉर्मल था दवाई से भी आराम नहीं लगता था मैं एक मेडिकल कॉलेज में बीएससी की अध्यापिका थी लेकिन इस बीमारी के कारण पढ़ाई छोड़नी पड़ी कुछ टाइम बाद मैंने वी.एड में दाखिला लिया लेकिन मेरी हालत में कोई सुधार ना था बल्कि बिमारी और बढ़ती जा रही थी मैंने अपनी सहेली को यह बात बताई तो उसने मुझे बताया कि बराड़ा, जिला अंबाला में एक त्रिलोक भारती मंदिर है उन्होंने मुझे वहां जाने की सलाह दी मैं वहां गई जैसे ही वहां आरती शुरु होती मेरा शरीर भारी हो जाता काफी दिन बीत गये फिर कुछ दिन बाद मेरे

सिर में बहुत दर्द हुआ और उसके बाद मैं हाजरी देने लगी मेरे अंदर एक भूत आ गया और जब वहां के लोगों ने मेरे अंदर भूत को पूछा कि तुम कौन हो कहां से आए हो तो उसने बताया कि मैं जिन हूं मुझे इसकी मम्मी ने भिजवाया है वह इसकी जान लेना चाहती है लोगों ने कहा तू झूठ बोल रहा है इसकी मम्मी क्यों भेजेगी तो उसने बोला कि देखना इसकी मम्मी कुछ दिन बाद मंदिर जरूर आएगी जो इस मंदिर के भगवान हैं वह उन्हें सजा जरूर देंगे कुछ वक्त बीता और हम फिर उस मंदिर में गए तो क्या देखते हैं कि एक छोटी सी बच्ची है वह बहुत झूल रही है मैं यह सब देखकर हैरान रह गई इस बच्ची की माता बहुत रो रही थी बहुत देर वहां रुकने पर हमें वही लड़की वहां मिलती है जो कुछ दिन पहले वहां झूल रही थी हमने उससे उसकी तबीयत के बारे में पूछा तो बताती है कि मैं बिल्कुल ठीक हूं वह बताती है कि यह छोटी सी बच्ची मेरे सौतेली बहन है बताती हैं कि भगवान की कृपा से मैं ठीक हो गई थी और मेरे ठीक होने के कुछ दिन बाद भगवान ने मेरी सौतेली मां को यह सजा दी है कहते हैं कि मैं भी किसी की बेटी हूं उन्होंने मेरे साथ इतना बुरा किया तो उनको तो सजा मिलनी ही थी यह सब सुनकर और देखकर मेरी आंखे खुल गई और महसूस हुआ कि आज भी कहीं ना कहीं यह सब चीज है हम लोग माने या ना माने पर पता तो उनको होता है जिन पर यह बीतती है ।

गुरु का ज्ञान

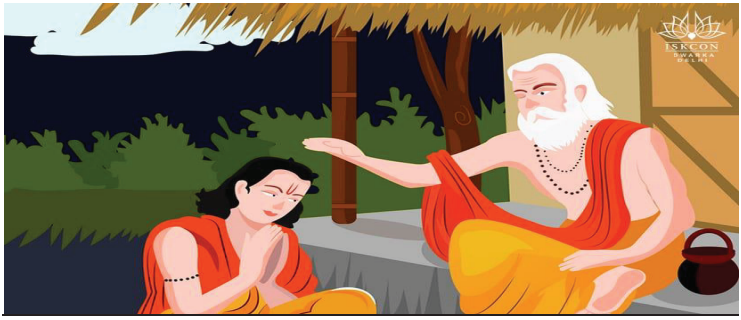

गुरु नहीं तो ज्ञान नहीं
ज्ञान के बिना कोई महान नहीं
भटक जाता है जब इंसान तो उसे रास्ता दिखाता है
कैसे पाना है उस ईश्वर को यह उसे सीखाता है।

ईश्वर के बाद अगर कोई है
तो वो गुरु है
दुनिया से वकीफ करता है
वो गुरु कहलाता है।

कहता है इंसान खुद को बड़ा
पर यह जाता है भूल
करने भरने वाला वो मालिक
मैं तो हूँ उसके चरणों की धुल

पैसा माया धरी रह जाएगी
साथ जायेंगे कर्म
गुरु की शरण में आजा बन्दे
सफल हो जाएगा तेरा जन्म

गुरु तो मैंने बना लिया है
डोलने से नहीं हटता मन
सोचता हु दो घडी उसका ध्यान लगाऊ
लेकिन धन जोड़ने में लग जाता है तन

माता पिता ईश्वर का रूप होते है। इसलिए एक बच्चे का पहला गुरु भी माता पिता ही होते है। एक बच्चा जब इस दुनिया में आता है। तब वह इस दुनिया से बिलकुल अंजान होता है। उसे शब्दों का भेद नहीं होता रिश्तो की समझ नहीं होती लेकिन वह जैसे जैसे वह बड़ा होता है। उसकी माँ उसे बोलना सीखती है। उसके पिता चलना सीखते है। धीरे धीरे वह रिश्तो को समझने लगता है। लकिन जब वह बड़ा होता है उस वक्त उसे एक पूर्ण गुरु की आवश्यकता होती है इसलिए कहते है की माता पिता के बाद हमारा दूसरा गुरु अध्यापक होता है जो हमें सही गलत का पथ पढ़ाए अगर गुरु नहीं तो ज्ञान भी नहीं जो ज्ञान जो संस्कार एक इंसान के अंदर होना चाहिए वह सिर्फ और सिर्फ गुरु ही दे सकता है अगर हमारे पास ज्ञान नहीं होगा तो हमारी कही भी कदर नहीं हो सकती जिसके पास ज्ञान हो वही महान होता है ज्ञान के बिना कोई महान नहीं एक गुरु हमारा अध्यापक होता है जो हमें शिक्षा प्रदान करता है लेकिन एक गुरु ऐसा भी आवश्यक होना चाहिए जो हमें यह सिखाए की उस ईश्वर को कैसे पाना है कैसे उसकी बंदगी करनी चाहिए वही गुरु हमें सही और गलत का भेद सिखाता है इस दुनिया से वाकिफ हमें जो करवाता है वही हमारा गुरु कहलाता है हर इंसान सोचता है मुझसे बड़ा मुझसे अमीर इस दुनिया में कोई नहीं लेकिन वह भूल जाता है की सबकुछ करने वाला तो सिर्फ वो ईश्वर है मै केवल उसके चरणों की धूल हु इंसान यह नहीं समझता की मैंने जो पैसा कमाया है मेरा पैसा और माया तो यही रह जाएगी लेकिन जब अंत समय आयेगा वहा तो केवल मेरे कर्म ही मेरे साथ जाएंगे इसलिए एक गुरु का कहना है की ए बंदे तू अगर तू इस किसी पूर्ण गुरु को अपना ले उसकी शरण में आ जाये तो मेरा जीवन सफल हो जायेगा जब एक इंसान गुरु का हाथ थमता है तब वही गुरु उस से एक वादा करता है की यहाँ तेरे जितने भी रिश्ते है वह तब तक तेरा साथ निभाएंगे जब तक तेरे शरीर में जान

है लेकिन जब तेरे शरीर से आत्मा रूपी ज्योति बाहर निकल गयी उस वक्त तेरे सभी रिश्ते टूट जाएंगे उस वक्त मैं तेरा हाथ थामने जरूर आऊगा और वह वादा निभाता भी जरूर है लेकिन जब एक मुर्ख इंसान गुरु बनाने की सोचता तो है पर उसका मन उसे उलझा देता है फिर वह सोचता है की मै गुरु तो बना रहा हु पर मेरा मन नहीं मान रहा मुझे नहीं समझ आ रहा की मेरा गुरु पूर्ण गुरु भी है या नहीं फिर वह इंसान अगर दो घडी उस ईश्वर की बंदगी करने की सोचत भी है तो उसका मन उसको गलत काम में लगा देता है उसे धन जोड़ने में लगा देता है फिर वह मृत्यु के पश्चात पछताता है

ईश्वर का खेल

दुखो की इस दुनिया में
कैसे करू भगवान को याद
जोड़ता हु हाथ उनके आगे
बताऊ मन की हर बात

बात भी की बताऊ
उनको बस दुःख ही सुनाता हु
लगाया मैंने जब अंतर ध्यान
तो पाया की
सामने बैठे थे भगवान
लगे कहने
बता ऐ मनुष्य तू क्यों है इतना परेशान

ऐ प्रभु ! तूने कैसी ये दुनिया रचाई
सास संग लड़े बहु
लड़ते यहाँ सगे भाई

तेरी इस दुनिया से आ गया हु तंग
क्यों इस खेल में किया मुझे शामिल
नहीं लड़ सकता मै यह जंग

लगे कहने प्रभु
दुनिया में रहने का है
सबका है अलग अलग किस्सा
भेजने से पहले वापस बुलाने किया था वादा
तभी बनाया था तुझे इस दुनिया का हिस्सा

दुनिया तो है सदियों पुराना खेल
इस जंग से मत भाग
दुखी है तू क्यों
मुझे बता तेरी क्या है मांग

उलझ गया मै उस वक्त
लगा सोचने
मांगना तो है मुझे बेहतर कुछ
कैसे रखु अपनी बात
बहोत सी मांगे है मेरी
रखु कैसे एक साथ

उस वक्त आया जो मन मे
सब मांग लिया
नहीं देर लगाई
प्रभु ने उसी श्रण मुझे दिया

बहुत कुछ माँगा प्रभु से

बहोत मांगी बेटे के लिया मन्नत
तो कही मांगी ली बेटी के लिए जन्नत
लेकिन जब संतान ने ही अपना रंग दिखाया
उस वक्त मै बहुत पछताया
व्यर्थ की कामनाए मांग ली मैंने
बस प्रभु से प्रभु को न मांग पाया

जब एक बच्चा माँ की गर्भ में होता है वहां उसे बहोत भी मुसीबतो को झेलना पड़ता है उस वक्त वह भगवान से हाथ जोड़कर विनती करता है और रोता हुआ कहता है हे प्रभु मुझे इस गर्भ से निकल मै सारी उम्र तेरी बंदगी करुगा लेकिन जैसे ही वह गर्भ से बाहर आता है जैसे जैसे वह बड़ा होता है उस ईश्वर से किये गए सारे वादे भूल जाता है फिर जब वह बचा होता है तो वह सोचता है की अभी तो मेरी खेलने की उम्र है जब मै बड़ा हो जाऊगा तब उस मालिक को याद करुगा फिर वह थोड़ा बड़ा होता है तो सोचता है की अभी तो मेरी पढाई की उम्र है जब और बड़ा जाऊगा तब उस भगवान का ध्यान करुगा वह है फिर वह सोचता है की अभी तो मै माता पिता की सेवा करता हूँ जब मेरी शादी होगी तब मै पाठ पूजा किया करुगा अब शादी भी हो गई और वह पत्नी और बच्चो में उलझ कर उस भगवान् से किए गए सभी वादे भूल जाता है लेकिन जब उसे अपना बच्चो का दुःख सताता है उसकी जिंदगी में दुःख आता है तब वह कहता है की इन रिश्तो में रहते हुए मै उस भगवान् को याद कैसे करू मै उनके आगे हाथ जोड़ता हु और अपने मन की हर बात बताता हु अब वह कहता है की बात भी क्या बताऊ मै तो उसको दुःख ही सुनाता हूँ लेकिन जब मैंने अंतर ध्यान लगाया हम चाहे इस दुनिया के लोगो के लिए कुछ भी कर ले उन्हें कितना भी सुखी क्यों न रखे लेकिन जब हम पर दुःख आता है उस वक्त हमारे बुलाने पर भी कोई हमारे पास नहीं आता लेकिन उस ईश्वर को दुःख की घडी में ही सही लेकिन दो पल का ध्यान लगाकर भी बुलाये तो वह दौड़े चला आता है इसी प्रकार जब वह दुखी इंसान अंतर ध्यान लगा कर ईश्वर को याद करता है वह देखता है की प्रभु उसके सामने बैठे है और उसे पूछते है की बता बन्दे तू इतना परेशान क्यों है तुझे क्या दुःख है तब वह इंसान प्रभु को कहते है के हे प्रभु तूने ये कैसे दुनिया बनाई है यहाँ तो कोई किसी का नहीं है हर रोज सास और बहु की लड़ाई है यहाँ तो सगे भाई भाई ही लड़ते है मै तेरी बनाई हुई इस दुनिया से तंग आ गया हु अगर तूने यह खेल रचा ही लिया है तो मुझे इस खेल में शामिल क्यों किया मै तेरे इस खेल की जंग नहीं लड़ सकता तो उस वक्त प्रभु

कहने लगे की तू चिंता किस बात की करता है इस दुनिया में रहने का सबका अलग अलग ढंग है जिस वक्त मैंने तुझे दुनिया में भेजा था तो भेजने से पहले ही तेरे साथ वादा किया था की तुझे एक दिन वापिस जरूर बुलाऊंगा वादा करने के बाद ही तुझे इस दुनिया का हिस्सा बनाया था और मै अपने वादे से पीछे नहीं हटूँगा मै अपना वादा जरूर निभाऊंगा यह दुनिया तो बरसो से चलती आ रही है तू इस संसार की जंग से मत भाग तू मुझे बता की तू क्यों दुखी है तेरी क्या मांग है तू मुझे बता उस वक्त वह दुखी इंसान उलझ जाता है और सोचने लगाता है की मुझे तो बहुत कुछ मांगना था माँ अपनी बात कैसे शुरू करू मै सब कुछ एक साथ कैसे मांग लू लेकिन वह सोचता है की अगर आज न माँगा तो पता नहीं कब मौका मिलेगा फिर उस वक्त उसके मन में जो भी आता है वह सब कुछ मांग लेता है और प्रभु भी देर नहीं लगाते जो कुछ भी वह मांगता है उसे उसी क्षण दे दिया जाता है वह ईश्वर से बहुत कुछ मांगता है कही बेटे की खुशिया मांगता है तो कही बेटी के सुख की मांग करता है वह अपने परिवार के लिए अपनों के लिए सब मांग लेता है लेकिन अपने लिए कुछ नहीं मांगता लेकिन जब उसकी अपनी ही संतान उसे दुःख देती है तब वह पछताता है और सोचता है की ईश्वर खुद मेरा पास आये थे और मुझे बोला भी था की तुझे जो चाहिए मांग ले उस वक्त मैंने व्यर्थ की इच्छाए उनके आगे रख दी लेकिन भगवन से भगवन को ही न मांग पाया !

जीवन का सच

शरीर रूपी पिंजरा मिला है
छोडकर इसे एक दिन जाना होगा
लाख इंकार करले तू
मौत जब सर पर आऐगी
उस दिन तुझे नया जन्म पाना होगा

आएगी जब मौत दर पर
तू चिखेगा चिल्लाएगा
तो कभी करेगा अरदास
होगी तुझे अपनो की जरूरत
कोई नही देगा तेरा साथ

निकलेगी जब आत्मा शरीर से
मिट्टी की तरह पड़ा रह जाएगा तन
सगे संबधी साथ नही देगे
नही काम आएगा धन

पापो का बोझ लिए
इस संसार से जब तू जाएगा
वहां माफी जैसा कोई शब्द नहीं होता
अपने ही कर्मों का फल तु पाएगा

होता है जब एक बच्चे का जन्म
एक बंद मुट्ठी में वह कर्म साथ लाता है
जाता है जब संसार से
रोते हुए खाली हाथ पसारे जाता है

वाह ! ओह मेरे भगवान
तू कैसा खेल रचाए
एक को भेजे इस दुनिया में
तो एक को पास बुलाए

इस दुनिया में हर इंसान को शरीर रूपी पिंजरा मिलता है इक दिन सबको यह छोड कर जाना ही होगा फिर चाहे उसकी मर्जी हो या ना हो लाख इंकार कर ले लेकिन जब मौत सर पर दस्तक देगी तो उसे इस संसार से जाना ही होगा और एक नया जन्म स्वीकार करना पड़ेगा एक इंसान अपना सारा जीवन अपने परिवार और दुनिया की जिम्मेदारियों में व्यर्थ करता है और दो पल भी उस ईशवर को याद नही करता उसके अंत समय मे कोई उसका साथ नही देता उसे यमदुत लेने आते है और उसे वैसे तंग करते है जैसे कसाई एक बकरे को काटता है तब वह इंसान रोता है चिल्लाता है उस वक्त वह भगवान को याद करता है लेकिन जिसने सारी उम्र निकाल दी एक पल भी उसे याद नही किया फिर अंत मे क्या फायदा उस वक्त उसे अपनों की जरुरत होती है लेकिन कोई उसका साथ नही दे पाता जब आत्मा शरीर से निकलती है उस वक्त इंसान का तन मिटटी का डेर की तरह पड़ा रहता है सगे सबंधी भी बैठे देखते रहते है और कमया हुआ धन भी काम नही आता जब इंसान इस जन्म के पापो का बोझ अपने सर पर लेकर यहाँ से जाता है तब उसके कर्मो को देखकर ही अगला जन्म दिया जाता है वहाँ माँफी जैसा कोई शब्द नही होता लाख गलतियाँ मान ले इंसान जब एक बच्चे का जन्म होता है वह उस ईशवर से गर्भ मे किए गए वादे एक बंद मुट्ठी मे साथ लाता है वह

अपने वादे और कर्म साथ लाता है लेकिन जब वह इस संसार से जाता है तब अपने पापो का बोझ लिए खाली हाथ जाता है उस वक्त न तो उसके पास कमाए हुए कर्म होता और ना ही उसे भगवान के साथ किए गए वादे याद रहते है उस वक्त उसके सिर पर सिर्फ और सिर्फ पापो का बोझ ही होता है इन्ही सब परस्थितयो को देखकर लेखिका कहती है की वहा ! मेरे परमात्मा तूने कैसा खेल रचाया है एक और तु बच्चे को जन्म देता है और दूसरी और उसी श्रण तु एक मनुष्य को अपने पास बुला लेता है

वक्त

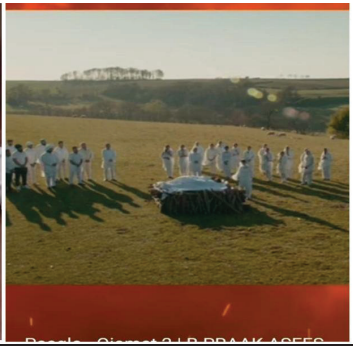

बचपना था मुझसे
नही समझ मे आ रहा था
वक्त का खेल
मानकर बैठा था सबको अपना
दुनिया ये लग रही थी
एक अच्छा सपना

हुआ जब बड़ा
आया समझ मे वक्त क्यों होता है
हस्ता है इंसान
उसका दुश्मन जब रोता है

वक्त क्या है
समझा गया था मै
बुरे वक्त मे इंसान की पहचान जो करता है
वह वक्त कहलाता है

सबका अपना टाइम होता है
आज दुजे इंसान को रोता देख
जो हस्ता है
कल वही इंसान रोता है

वक्त सही गलत की पहचान कराए
यहाँ कौन हमारा अपना
कौन बैगाना यह भी हमे दिखाए

एक वक्त होता है
जब हम लेते है जन्म
वही सा शुरू हो जाते है
हमारे अच्छे बुरे कर्म

आता है दुनिया में
उसे मखमल के बिस्तर पर सुलाया जाता है
जाता है जब संसारा से
उसे धरती पर लिटाया जाता है

जन्म में बाँटे जाते है लड्डू
मृत्यु के प्रशचात
भोग पर खिलाई जाती रोटी
माडी किस्मत इंसान की
ना जन्म के लड्डू खाए
अपने भोग का खाना खाने की भी हिम्मत नहीं होती

वक्त कब क्या दिखा दे यह किसी को नहीं पता वक्त के दो पहलु होते है सुख और दुःख यह दोनों ही इंसान पर जिंदगी में कभी न कभी एक बार जरूर आते है एक इंसान जिसके पास करोडो का धन अच्छा घर है वह

सुखी जीवन जी रहा होता है की बुरा वक्त अपना ऐसा प्रभाव डालता है की उसे बंगले से झोपड़ी पर ले जाता है और दूसरी और एक झोपड़ी में रहने वाला इंसान जिसे दो वक्त की रोटी मुश्किल से मिलती है अगर भगवान की दया अगर उसपर हो जाए तो वही झोपड़ी में रहने वाला इंसान लाखो के धन के मालिक बन सकते है इन्ही प्रस्तीथिओ को देखकर लेखिका अपने मन के भाव व्यक्त करती है जिसमे वह उस इंसान के बारे में बताती है जिसे अभी दुनिया की समझ नहीं है वक्त के खेल को वह नहीं समझता फिर वह बताता है की मुझमें अभी बच्चपन था वक्त क्या है वक्त का खेल क्या होता है मै नहीं समझ पा रहा था मै इस दुनिया के लोगो को अपना माने बैठा था मुझे यह दुनिया एक अच्छा सपना लग रही थी फिर वह कहता है की जब मुझमें समझ आई मेरी उम्र बढ़ने लगी तब मुझे वक्त का खेल समझ आने लगा था फिर मै दुनिया के लोगो को समझ पा रहा था इस दुनिया के लोग किसी की ख़ुशी बर्दाश नहीं कर सकते इसलिए लेखिका का कहना है की आज जिस दुखी इंसान को रोता देखकर जो व्यक्ति हसँता है वह इस बात को भुल जाता है की आज जिसे रोता देखकर वह हँस रहा है कल उसके ऊपर भी वक्त का ऐसी कहर पड़ सकता है की उसे भी रोना पड़ सकता है आज जिसे हम अपना माने बैठे है उसकी असली पहचान भी हमे हमारा बुरा वक्त ही करवाता है हमारे लिए क्या अच्छा है क्या बुरा है कौन हमारा अपना है कौन बैगाना है यह सबकी सीख भी हमे वक्त ही देता है फिर लेखिका बताती है की एक वक्त होता है जब हम जन्म लेकर इस दुनिया में आते है हमारे जन्म से ही हमारे कर्म बनने शुरू हो जाते है फिर वो हम पर निर्भर करता है की हम अच्छे कर्म करते है या बुरे ? जिस वक्त इंसान जन्म लेता है उसे मक्ख़मल के बिस्तर पर लिटाया जाता है सर्दियो के जन्म में उसका खास ख्याल रखा जाता है और फिर जिस वक्त उसी इंसान की मृत्यु हो जाए उसे धरती पर ही लिटाया जाता है फिर चाहे गर्मी हो या सर्दि फिर लेखिका कहती है की कितनी अजीब बात है हमारे जन्म के वक्त हमारे घर में लड्डू बाँटे जाते है और हमरी मृत्यु के पशचात लोगो को हमारे नाम का भोजन करवाया जाता है लेकिन अफसोस इस बात का है ना तो हम जन्म के लड्डू खा सकते है और न अंत समय का भोजन